।।श्री गणेशाय नमः।।
।।श्री बाबा गंगाराम देवाय नमः।।
।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दनाय नमः।।

विष्णुअवतारी – झुंझुनूंवाले
श्री बाबा गंगाराम के भजनों का
अनमोल संग्रह

श्री बाबा गंगाराम ज्योति दर्शन

खण्ड – १

भजन १ से १०० तक

www.babagangaram.com

ॐ || जय हो पंचदेव दरबार की || ॐ || जय हो बाबा गंगाराम की || ॐ || जय हो झुंझुनूंधाम की || ॐ
ॐ || जय हो पंचदेव दरबार की || ॐ || जय हो बाबा गंगाराम की || ॐ || जय हो झुंझुनूंधाम की || ॐ

।।श्री गणेश वन्दना।।

दोहा: **देवों के सिरमौर को, प्रथम मनायें आज।**
पंचदेव दरबार में, आओ हे गणराज।।

गणपत बलकारीजी, फतह म्हारी आज करो।
रिद्ध सिद्ध के दाताजी, फतह म्हारी आज करो ।। टेर।।

कुण तो तुम्हारो देवा, पिता रे कुहावे।
कुण थारी माताजी, फतह म्हारी आज करो ।। 1।।

पिता तो तुम्हारे देवा, हैं शिवशंकर।
माता पार्वती, फतह म्हारी आज करो ।। 2।।

गुड़ के मोदक, भोग लगत है।
फुलड़ारी मालाजी, फतह म्हारी आज करो ।। 3।।

रणत भवन सूँ थे, आवोजी विनायक।
रिद्ध-सिद्ध ल्यावोजी, फतह म्हारी आज करो ।। 4।।

।।श्री गणेश वन्दना।।

(तर्ज - जहाँ डाल-डाल पर सोने की...)

यहाँ आज सभा में सबसे पहले सुमिरन करता तेरा,
तुम संकट हरियो मेरा - 2

तुम सब देवन में देव बड़े हो, पहले तुम्हें मनाते,
संकट में आये भक्तों की, तुम ही तो लाज बचाते-2
अब लाज आज रख भक्तों की संकट ने हमको घेरा।।
तुम संकट हरियो ...

माँ पार्वती है माता तेरी, शिवजी पिता कहाते,
तुम मूषक चढ़कर आवो गजानन, भक्त तुम्हें हैं मनाते-2
अब आ जाओ रिद्ध-सिद्ध के दाता, बालक हूँ मैं तेरा।।
तुम संकट हरियो ...

जो सच्चे मन से करे ध्यावना, उसके काज बनाते,
जो भूल गये हों पूजा तेरी, सफल नहीं हो पाते-2
हो सफल हमारा जीवन अब, तेरे चरणों में डेरा।।
तुम संकट हरियो ...

।।श्री सरस्वती वन्दना।।

(तर्ज - बाबुल की दुआएं ...)

दोहा: **सरस्वती के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।**
ज्यों - ज्यों खर्चे त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात।।

हे स्वर की देवी सरस्वती, माँ शत्-शत् है प्रणाम मेरा,
शब्दों में सजाकर भेज रहा, माँ सुन लेना पैगाम मेरा ।। टेर।।

मेरे अंधियारे जीवन में, तूने ज्ञान का दीप जलाया है,
शब्दों की पावन गंगा में, मेरा हाथ पकड़ नहलाया है,
गर तेरा सहारा ना मिलता, माँ क्या होता अंजाम मेरा ।।1।।

जिस दिन से शरण में आया हूँ, भावों की सरिता बहती है,
शब्दों में लिपट कर मन वीणा, छन्दों में कविता कहती है,
मैं सोच रहा किन शब्दों में, माँ कैसे करूं गुणगान तेरा ।।2।।

हृदय में वास तुम्हारा है, मेरी जिह्वा पर भी वास करो,
नित नई रचना रच पाऊँ मैं, मेरे मन में ये विश्वास भरो,
मेरी कलम पे आन विराजो तुम, माँ 'हर्ष' जपे जब नाम तेरा ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दुनिया से सहारा क्या/तेरे हुस्न की क्या ...)

दरबार ये गंगाराम का है, यहां जो मांगो वो मिलता है।।
यहाँ जो मांगो वो मिलता है, किस्मत का ताला खुलता है।।

ये विष्णु का अवतारी है, ये जग का पालनहारी है।
इसकी मर्जी से ही भक्तों, संसार ये सारा चलता है।।1।।
दरबार ये .....

जो राम ने मारूतिनन्दन को, गंगाराम ने देवकीनन्दन को,
वरदान दिया जो भक्ति का, घर घर में डंका बजता है।।2।।
दरबार ये .....

यहाँ देरी का कोई काम नहीं, यहाँ सुबह की होती शाम नहीं,
ये तो पल भर में ही भक्तों, सबकी तकदीर बदलता है ।।3।।
दरबार ये .....

ये सबसे सच्चा साथी है, ये सबसे अच्छा मांझी है,
ये थाम ले जिसकी नईया को, 'सोनू' वो पार उतरता है।।4।।
दरबार ये .....

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - देख तेरे संसार की हालत ...)

प्रेम भाव भक्ति की पूजा होती यहाँ स्वीकार,
ऐसा पंचदेव दरबार।
जो भी यहाँ पर शीश झुकाते होता बेड़ा पार,
ऐसा पंचदेव दरबार।।

गंगाराम नाम है प्यारा, पावन जैसे गंगा धारा,
राम नाम से मुक्ति मिलती, गंगा मन को शीतल करती,
गंगा-राम के मेल से भक्तों, हो जाता उद्धार।।
ऐसा पंचदेव दरबार ...

देवकीनन्दन इनकी छाया, भक्ति का इतिहास रचाया,
तोड़ दिये सब जग के बन्धन, शीश झुका कर कर लो वन्दन,
बाबा के चरणों में बैठे, लुटा रहे हैं प्यार।।
ऐसा पंचदेव दरबार ...

झुंझुनूं धाम की रज है प्यारी, कट जाती है विपदा सारी,
जो भी रज को शीश लगाता, सुख सम्पति वैभव सब पाता,
पंचदेव दरबार की रज को, रखो हमेशा पास।।
ऐसा पंचदेव दरबार ...

भक्तों का दुख हरने आये, नारायण अवतारी।
गंगाराम के रूप में आये, चक्र सुदर्शनधारी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दिल दिवाना ...)

गंगाराम का जिनके सिर पे हाथ है,
उन भक्तों के देखो कितने ठाठ है।
क्या बात है - क्या बात है,
तुम देखो जाकर के, गंगाराम का ...।।टेक।।

देवकीनन्दनजी पे अपना हाथ फिराया था,
पंचदेव दरबार लगा प्यारा मंदिर बनवाया था,
कदम-कदम पे, रहता उनके साथ है।
उन भक्तों के ... ।।1।।

दशमी के दिन जिस घर में इनकी ज्योति जलती है,
जाकर देखो उस घर में रोज दिवाली मनती है,
खुशियों की करता बाबा बरसात है।
उन भक्तों के ... ।।2।।

सारी दुनिया जान गई सच्चा तेरा धाम है,
कलियुग के अवतारी तो बाबा गंगाराम है,
'श्याम' के संग में रहता दिन और रात है।
उन भक्तों के ... ।।3।।

गंगा के संग राम मिलाकर, गंगाराम कहाये हो।
कलियुग में भक्तों के हित तुम गंगाधार बहाये हो।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अरररररर ओ कालो कूद पड्यो ...)

ओ म्हारो बाबो झुंझनूंवालो, ओ सौरे भगतां को रखवालो।
यो बेड़ा पार लगावे रे।। अरररररर

ओ यो तो विष्णु को अवतारी, देवकीनन्दन आंका पुजारी।
यो सारी दुनिया जाणै रे।। अरररररर

माँ गायत्री जब-जब ध्यावे, ओ यो तो पल में दौड्यो आवै।
यो संकट दूर भगावै रे।। अरररररर

खोल के बैठ्यो है भण्डारो, ओ दर पै आवै है जग सारो।
यो मोकलो माल लुटावै रे ।। अरररररर

ओ दर पे बाजै नौबत बाजा, 'श्याम' कह शरण में इनकी आजा।
यो अपने गले लगावे रे ।। अरररररर

राम नाम से मन, गंगा से तन पावन होता है।
बाबा गंगाराम भजे से दोहरा फल मिलता है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - हट जा ताऊ पाछै नै ...)

मनै इकबर - 3 झुंझनूं जावण दे, गंगाराम मनावण दे ।टेर।।

झुंझनूं में दरबार निराला, बैठ्या दुनिया का रखवाला,
मनै बाबा का - 3 दर्शन पावण दे, गंगाराम मनावण दे।।1।।

बाबा विष्णु का अवतारी, भक्तां की हर बात संवारी,
मनै चरणां - 3 शीश झुकावण दे, गंगाराम मनावण दे।।2।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, चरणां में नित करूं मैं वन्दन,
रज इणकी - 3 मनै लगावण दे, गंगाराम मनावण दे।।3।।

दीन दुखी का एक सहारा, गंगाराम लगै मनै प्यारा,
मनै नाचण - 3 और नचावण दे, गंगाराम मनावण दे।।4।।

'संजय' महिमा नित की गावै, भक्त सभी जयकार लगावै,
भजनां सूं - 3 मनै रिझावण दे, गंगाराम मनावण दे।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पाँचों अंगुली नहीं ...)

महिमा बड़ी निराली देखी हमने झुंझनूं धाम की,
जहाँ के हर कण - कण में बसे हैं बाबा गंगारामजी।

त्याग तपस्या सत्य का देखो, वहाँ अनूठा संगम है,
स्वर्ग से सुन्दर लगता नजारा, पावन होता ये मन है,
भक्त शिरोमणी पहरा देते, वहाँ सुबह और शाम जी ।।1।।

सूरज की पहली किरणें भी, चरणों में वंदन करती,
पंचदेव दरबार में भक्ति, की धारा अविरल बहती,
वहाँ की रज का तिलक लगा लो, बना लो बिगड़े काम जी ।।2।।

शिव परिवार कृपा करते हैं, माँ लक्ष्मी भण्डार भरे,
दुर्गा दुर्गति दूर करे और, हनुमत भक्ति का वर दे,
वहाँ समाधि देवकीनन्दन, गाथा है बलिदान की ।।3।।

पंचदेव मन्दिर की शोभा, मुख से वरणी न जाये।
बाबा गंगाराम के दर्शन, जीवन सफल बनाये।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ममता की शीतल छाया में ...)

ममता की शीतल छाया में जब भी मुझे सुलाओ माँ,
तुम लोरी की जगह बाबा के मीठे भजन सुनाओ माँ,
रोज सवेरे जय बाबा की बोल के मुझे जगाओ माँ,
तुम लोरी की ...।टेर।।
जय हो गंगाराम बाबा, जय हो गंगाराम।

कैसे देवकीनंदन को, बाबा ने आदेश सुनाया था,
सपने में आकर के कैसे, उनको दरश दिखाया था,
बाबा की किरपा से मंदिर, कैसे बना बताओ माँ।
तुम लोरी की ...1

कैसे जगवालों के ताने, भक्त देवकी सह पाए,
कैसी बाबा की भक्ति की, शिरोमणि वो कहलाए,
त्याग, तपस्या, सत्य की गाथा, मुझको भी समझाओ ना।
तुम लोरी की ...2

जलती चिता से कैसे सबको, चमत्कार दिखलाया था,
हाथ दाहिना उठा शिरोमणि, बालरूप दर्शाया था,
कैसे शीश से गंगा की, धारा निकली बतलाओ ना।
तुम लोरी की ...3

एक बार मुझको भी ले चल, झुंझनूं धाम दिखा दे तू,
पंचदेव दरबार के दरशन, मुझको भी करवादे तू,
तुम भी गंगाराम प्रभु के, भजनों में रम जाओ माँ।
तुम लोरी की ...4

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पंख होते तो उड़ ...)

शंख बजे शहनाई रे, गरूड़ चढ़े भगवान,
गंगाराम की सवारी आई रे ।। टेर।।

नीले नभ में चाँद और सितारे,
सहमे हुए हैं लाज के मारे,
गरूड़ के ऊपर करके सवारी,
निकले हैं बाबा विष्णु अवतारी। गरूड़ चढ़े भगवान...।।1।।

मणियों का है मुकुट सुशोभित,
जगमग जगमग जग है आलोकित,
विष्णु लोक से चल कर आए,
हम भक्तों को दरस दिखाए। गरूड़ चढ़े भगवान... ।।2।।

करूणा भरे दो नैन मनोहर,
आशीष वचन लहराए अधर पर,
धूम मची है तीनों भुवन में,
देव सुमन बरसाए गगन से। गरूड़ चढ़े भगवान... ।।3।।

फूलों से दरबार सजाया,
पंचदेव दरबार लगाया,
करते हैं बाबा का शुभ अभिनंदन,
चरण कमल में करते हैं वंदन। गरूड़ चढ़े भगवान ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - कभी राम बन के ...)

पिता मात बनके, बन्धु भ्रात बनके
मुझे दे दो सहारा गंगारामजी।

तुमने लाखों को पार लगाया, फिर मुझको क्यों बाबा भुलाया,
माना मैं बालक नादान, फिर भी धरता तेरा ध्यान।
मुझे दे दो सहारा...।।1।।

तेरी झुंझुनूं नगरिया निराली, कोई जाये ना दर से खाली,
बिन माँझी पतवार, कर दो नैया भव से पार।
मुझे दे दो सहारा... ।।2।।

भक्ति-पूजा मैं कुछ भी ना जानूं, मैं तेरा, तू मेरा ये मानूं,
करके श्रद्धा विश्वास, मैं तो आया तेरे पास।
मुझे दे दो सहारा... ।।3।।

खाली झोली मेरी बाबा भर दो, बाबा भक्ति का मुझको भी वर दो,
'सोनी-मारवाल' साथ, सिर पे धर दो अपना हाथ।
मुझे दे दो सहारा... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धमाल ...)

चालो-चालां झुंझनूं धाम, बाबो आज बुलायो रे
चालो-चालां रे।
बाबा गंगाराम धणी को, उत्सव आयो रे
चालो-चालां रे।।

झुंझुनूं को यो देव निरालो, सब नै देवै मन चाह्यो,
खोल खजानो बैठ्यो बाबो, माल लुटायो रे।
चालो-चालां रे।।1।।

भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन, सेवक बनग्या हनुमत सा,
भक्ति को सारी दुनिया नै, पाठ पढ़ायो रे।
चालो-चालां रे।।2।।

मां गायत्री करी प्रार्थना, सत को परचो दिखलायो,
सती अनुसूईया, सीता बनकर धर्म निभायो रे।
चालो-चालां रे।।3।।

नाम सुमिर कर कलयुग मांही, भवसागर नर तर जावै,
'सोनी-मारवाल' कै रस्तो, समझ मं आयो रे।
चालो-चालां रे।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ओ पालनहारे ...)

हे कलिमल हारी, विष्णु अवतारी,
बाबा तेरा सुमिरन रोज करूं।
गंगा सम पावन, महिमा मन भावन,
बाबा तेरी सुमिरन रोज करूं।।

श्रावण शुक्ला की दशमी अवतारे,
पीछे कल्याणी तट पर पधारे,
पावन वो धारा, ध्याये जग सारा ।।1।।

महिमा पौष की शुक्ला चतुर्थी,
तूने धरती से लीला समेटी,
सपने में आये, परचा दिखलाए।।2।।

आया जेठ का पावन दशहरा,
सूरज झुंझनूं में निकला सुनहरा,
पंचदेव मन्दिर, भक्तों की मंजिल।।3।।

जब भी पाप धरा को सताता,
'हर्ष' आकर उसे तू मिटाता,
तुझसा ना दूजा, करता हूँ पूजा।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दुनिया चले ना श्रीराम के बिना ...)

मुख से तुम्हारे जब नाम निकले,
राम निकले या गंगाराम निकले।

रामजी की दुनियाँ दिवानी है,
गंगा में डुबकी लगानी है,
इकबार नहीं हर बार निकले, राम निकले ....।।1।।

रामजी अवध अवतारे थे,
बाबाजी तो झुंझनूं पधारे थे,
सोते उठते यही नाम निकले, राम निकले ....।।2।।

विष्णु धरा पर आए हैं,
राम गंगाराम बन आए हैं,
'हर्ष' सुबह और शाम निकले, राम निकले ... ।।3।।

चरणों में बाबा के आओ, ज्योति का दर्शन पाओगे।
खाली हाथ यहाँ पर आओ, झोली भरकर जाओगे।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पंचवटी के घाट ...)

बाबा गंगाराम, तुम्हारा सारे जग में नाम,
आज घर आ जाना - 2 ।।टेर।।

फूलों के गजरे से, तुमको सजाया - 2,
केशर चन्दन महक उठे हैं, सजा तेरा दरबार,
आज घर आ जाना।।1।।

मीठे - मीठे भजनों से, तुझको रिझाया - 2
हनुमत, शंकर, दुर्गा के संग लक्ष्मी माँ के साथ,
आज घर आ जाना।।2।।

पंचदेव मंदिर से, तुमको बुलाये - 2,
छोड़ के झुंझुनूं आज पधारो, विष्णु के अवतार,
आज घर आ जाना।।3।।

छप्पन भोग के, थाल सजाये - 2,
आज हमारे घर भी जीमो 'हर्ष' करे मनुहार,
आज घर आ जाना।।4।।

।। ॐ ।। जय हो पंचदेव दरबार की ।। ॐ ।। जय हो झुंझुनूंधाम की ।। ॐ ।। जय हो बाबा गंगाराम की ।। ॐ ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - किसी की नैया का माँझी बन जाता है ...)

दो नामों को जोड़ो, तो इक बन जाता है,
वो बनके गंगाराम, दुखड़ों को मिटाता है,
इक पापों को धोये, एक पार लगाता है ...2

दुनिया में दोनों नाम अमर है,
भक्तों पे दोनों का ही असर है,
धरती पे भगतों को, ये स्वर्ग दिखाता है - 2
दो नामों को ...

गंगा नहाले, राम गुण गाले,
अलग-अलग चाहे उसको रिझाले,
है एक नाम पावन, एक मुक्ति दिलाता है - 2
दो नामों को ...

इस दाता की इतनी दया है,
काम भगत का सारा हुआ है,
कहता है 'पवन' पीतल, सोना बन जाता है - 2
दो नामों को ...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दो हंसों का जोड़ा ...)

काम मुश्किल से मुश्किल आसान हो गया,
गंगाराम की शरण में आराम हो गया।

झुंझनूं में दरबार लगाए, पर्चा हाथों हाथ दिखाए,
सारी दुनिया में मशहूर, नाम हो गया।
गंगाराम की शरण में .... ।।1।।

कलियुग में बस एक सहारा, जिसने भी बाबा को पुकारा,
उसके जीवन का बिगड़ा, हर काम हो गया।
गंगाराम की शरण में .... ।।2।।

इसके भरोसे जिसकी नैया, गंगा पानी राम खेवैया,
उसके भव पार का, इंतजाम हो गया।
गंगाराम की शरण में .... ।।3।।

पापों को धोए गंगा का पानी, मुक्ति दिलाए राम की वाणी,
कहे 'पवन' झुंझुनूं मुक्तिधाम हो गया।
गंगाराम की शरण में .... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थोड़ा सा प्यार हुआ है ...)

सुमिर गंगाराम सुमिर ले, चित्त कर पावन।
भूमि बंजर हो चाहे, पल में बरसेगा सावन।।

देवकी ने जब ध्याया, थी कोमल निर्मल काया,
तेज बाबा का पाया, क्षण में ब्रह्माण्ड दिखाया,
मोझ को पाना हो तो SSS कलियुग में एक ही साधन।
सुमिर गंगाराम ....

गंगा सम पावन है ये, नाम भवतारण है ये,
संग सुत देवकीनन्दन, दु:खों का निवारण है ये,
फिर से हनुमान-राम ने SSS रूप कर लिए हैं धारण।
सुमिर गंगाराम ....

गंगा और राम का संगम, अगर भजते हैं तुम हम,
सफल होगा जन्म ये, मिलेगा अमृत निरूपम,
नाम जब से है पुकारा SSS महका 'संजीव' का आंगन।
सुमिर गंगाराम ....

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - देर हो सकती है पर काम/बरसात हो रही है ...)

जिस सुख की चाहत में ये संसार भटकता है।
वो गंगाराम तेरे मन्दिर में बरसता है ।। टेर।।

जैसे भरा पानी, सागर में खारा है,
वैसे भरा दु:ख से, जीवन हमारा है,
जिस अमृत को पीने को, संसार तरसता है, वो गंगाराम...

प्रभाव कलियुग का, छाने लगा भारी।
आए धरा पे तुम, विष्णु के अवतारी,
जो राम नाम रस पीकर, ये जन्म सुधरता है, वो गंगाराम...

करके भरोसा जो 'सोनू' दिवाने पर,
एक बार आते हैं, तेरे ठिकाने पर,
फिर जीवन उनका तेरे, चरणों में गुजरता है, वो गंगाराम...

कितना सुन्दर कितना पावन बाबा तेरा नाम।
बाबा गंगाराम जपे से मिल जाता आराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - आये हो मेरी जिन्दगी में ...)

क्यों दर्द सहने पड़ते, क्यों इतने गम उठाता,
जो गंगाराम पहले, तेरी शरण में आता।।टेर।।

फिरता रहा मैं यूँ ही, दर-दर पे मारा-मारा,
इस आस में कि कोई, देगा मुझे सहारा,
क्यूं जिन्दगी के अनमोल, पल यूं ही गंवाता।
जो गंगाराम....

तूने शरण में लेकर किस्मत मेरी संवारी,
कैसे बताऊँ मुझपे किरपा की कितनी भारी,
क्यूं अपनी बदनसीबी, पे आँसू मैं बहाता।
जो गंगाराम....

बीतेगी जिन्दगी अब, तेरी शरण में बाबा,
सेवा करूंगा तेरी, करता हूँ तुमसे वादा,
'सोनू' कहे तू जन्मों, तक साथ है निभाता।
जो गंगाराम....

भटक रहा क्यों दर दर जाके, बाबा को पहचान।
जपो राम पहनो गंगा का, हृदय रचित परिधान।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ओ राधा म्हानै सांची ...)

जब - जब धरती पर धर्म का नाश हो गया,
तब - तब ही विष्णु का अवतार हो गया।।टेर।।

त्रेता में रघुवर, द्वापर में कृष्ण बन आए,
कलियुग में उनका नाम गंगाराम हो गया ।।1।।

गंगा सा पावन, राम सा मनभावन,
इस अनुपम संगम का दीदार हो गया ।।2।।

ये सत्य का परचम, झुंझनूं में लहराया,
इस ध्वज से दुनिया का उद्धार हो गया ।।3।।

कहे दास 'रवि' सब, हिलमिल बोलो जयजयकार,
जिसने भी नाम लिया भवपार हो गया ।।4।।

श्रावण शुक्ला दशमी मंगल, सम्वत् उन्नीस सौ बावन।
गंगाराम बन जन्में विष्णु, करने धरती को पावन।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - तेरी राहों में खड़े हैं दिल थाम के ...)

सारे जग से निराला, तेरा धाम जी,
मुझे झुंझनूं बुलालो गंगारामजी।।टेर।।

पंचदेव मंदिर की रज को मैं मस्तक पर धारूँगा।
वहाँ के जल का करूँ आचमन, जीवन धन्य बनाऊँगा
सारे जग से निराला....

शिव परिवार के दर्शन करके, माँ दुर्गा को मनाऊँगा।
माँ लक्ष्मी का सुमिरन करके, बालाजी को ध्याऊँगा।।
सारे जग से निराला....

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, को मैं शीश नवाऊंगा।
सेवा पूजा त्याग की महिमा, बाबाजी मैं गाऊँगा।।
सारे जग से निराला....

हरि विष्णु के अंश रूप में, आपका दर्शन पाऊँगा।
कहे 'रवि' प्रभु आपके दर पे, बार - बार मैं आऊँगा।।
सारे जग से निराला....

त्रेता में श्रीराम बने, द्वापर में घनश्याम।
कलियुग में हरि रूप धरे हैं, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पणिहारी ...)

चालो-चालो चालां आपां झुंझनूंजी,
जठे बैठ्यो गंगाराम, तीरथ बणग्यो झुंझनूं धाम।
दरशन करस्याँ जी कि, चालो चालां झुंझनूं....

बाबा गंगारामजी को झुंझनूं में,
देखो मंदिर आलीशान, जांकी महिमा बड़ी महान,
हाजरी तो भरस्याँजी, कि चालो चालां झुंझनूं ... ।।1।।

बाबा गंगारामजी कै साथ में जी,
देखो बैठ्यो शिव परिवार, दुर्गा लक्ष्मी को दरबार,
बालाजी स्यूं मिलस्यांजी, कि चालो चालां झुंझनूं... ।।2।।

झुंझनूं में बाबाजी को लगर्योजी,
देखो पंचदेव दरबार, उमड़ै सारो ही संसार,
आपां कईयाँ रूकस्यांजी, कि चालो चालां झुंझनूं... ।।3।।

'रवि' कह्वै बाबा गंगारामजी कै,
आपां धोक लगास्यां जाय, म्हारी गैहरी मन में आय,
ध्यान बांको धरस्याँजी, कि चालो चालां झुंझनूं ... ।।4।।

।। ॐ ।। जय हो पंचदेव दरबार की ।। ॐ ।। जय हो बाबा गंगाराम की ।। ॐ ।। जय हो झुंझुनूंधाम की ।। ॐ ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - तेरे हाथों की लकीर ...)

तेरे हाथों की लकीर बदलेगी आज तेरी तकदीर बदलेगी,
जरा तू आजमा के देख ले, मिल जाएगा खोया खजाना,
तू झुंझनूं में आके देखले ...

विष्णु अंश का वंश निराला, देवकी भक्त ने किया उजाला,
मंदिर की शोभा आली, यहाँ हर दिन रहे दिवाली,
तू ज्योत जगाके देखले।। मिल जायेगा ....

पंचदेव दरबार सुहाना, बाबा गंगाराम को नेह निभाना,
जिसने भी अर्ज लगाई, करता है उसकी सहाई,
तू अर्ज लगाके देख ले।। मिल जायेगा ...

त्याग, समर्पण की मूरत यहाँ है, ऐसा नजारा बोलो कहाँ है,
गायत्री माँ वैरागन, सतवन्ती अमर सुहागन,
तू शीश झुकाके देखले।। मिल जायेगा...

जिन-जिन भक्तों ने याद किया है, बाबा ने उनको मौका दिया है,
झुंझनूं में खुशी मनाले, तू सोये भाग्य जगाले,
'राजेन्द्र' तू मनाके देखले।। मिल जायेगा ...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - जद से विराज्यो ...)

जद से विराज्यो है म्हारो बाबो बालू रेत मं,
हीरा बरसन लाग्या, मोती बरसन लाग्या,
जाकर कै देखो झुंझनूं कै खेत मं ।।टेर।।

भक्त देवकी नै सपनै कै मांहि दरश दिखायो,
झुंझनूं नगरी मं प्यारो सो मन्दिरयो बणवायो,
पंचदेव दरबार लगायो बालू रेत मं, हीरा बरसन ....।।

जी माटी पर पॉव न धरता, बच-बच करके रहता,
बी माटी को तिलक लगाकर जावै जय-जय करता,
दौड्या-दौड्या जावै रे सावन मं जेठ मैं, हीरा बरसन ...।।

बैठ गयो सिंहासन ऊपर बांटण लाग्यो खजानो,
लाखों-लाखों भगतां को वहां हो गयो आणो-जाणो,
झोली भर ले जावे रे बाबा सै भेंट मं, हीरा बरसन ...।।

सांचो-सांचो न्याय चुकावै विष्णु को अवतारी,
जद सै बण्यो यो मंदिर प्यारो आवै दुनिया सारी,
कलियुग मं प्रगट्यो बाबो भगतां क हेत मं, हीरा बरसन ...।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - लग रहा सोणा-सोणा ...)

बाँटो आज बधाइयाँ, सब बांटो आज बधाईयाँ।
जायो माँ लक्ष्मी कै लाल भक्तों बाँटो आज बधाईयाँ। टेर।।

आज बड़ा ही शुभ दिन, कोई मंगलाचार सुनाओ,
गंगाराम पधारे आंगन, झूम-झूम कर गाओ,
सब लेवो आज बलैया -2, जायो माँ... ।।1।।

सोणा-सोणा मुखड़ा, प्यारा-प्यारा लागे,
नजर हटाए हटती नाहीं, राजदुलारा लागे,
लागे नहीं नजरिया - 2, जायो माँ... ।।2।।

गंगा के संग राम मिला तो गंगाराम कहाया,
विष्णु का अवतारी बनकै, भक्तों के मन भाया,
लेवो आज बधाईयां - 2, जायो माँ... ।।3।।

युगों - युगों के बाद धरा ने एक फरिस्ता पाया है।
बाबा गंगाराम जहां में अवतारी बन आया है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धमाल ...)

बाबा नाचण द्यो थारै भगतां न थारो खूब सज्यो सिणगार।
सिंहासन पर सज कर बैठ्यो विष्णु को अवतार।।
बाबा नाचण....

रूप सलुणो थारो बाबा मनड़ो घणो लुभाव रे,
ताल से ताल मिले तो बाजै, घुंघरूं की झंकार ।।1।।

सम्मोहन कर दिन्हो म्हां पर रूप थारो मतवारो रे,
पंचदेव दरबार मैं थारे, भगता की भरमार ।।2।।

गंगाराम नाम है प्यारो, कल्पतरू की छाया रे,
प्रेम कृपा बरसावै बाबो, जो भी आवै द्वार ।।3।।

भक्त शिरोमणि की किरपा से, 'सोहन' अमृत बरसे रे,
माँ गायत्री की करूणा भी बरसे अपरम्पार ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरे दुख के दिनों में वो/बिन सजनी के साजन...)

मेरी तो हर मुश्किल, आसान तुम्हीं से है।
तुझे पता मेरी औकात, मेरी शान तुम्हीं से है ।।

तुमसे पहचान मेरी, मानूं एहसान तेरा,
मेरे उठते हैं जो भी कदम, बाबा फरमान तेरा,
ओ गंगाराम बाबा, सम्मान तुम्हीं से है। मेरी तो ....

सरकारी में तेरी रहूँ दरबारी मैं चाहूँ,
सेवा मिले कदमों की, दीदारी मैं चाहूँ,
झुंझनूं में बुला लेना, अरमान तुम्हीं से है। मेरी तो...

अब तक जो तूने दिया, मानूं एहसान तेरा,
मेरी राह नहीं भटके, करूं मैं गुणगान तेरा,
'सोहन' करता ऐलान, मेरा मान तुम्हीं से है। मेरी तो ...

जब-जब होहिं धरम की हानि, तब तब प्रभु खुद आये।
राम बने घनश्याम बने अब गंगाराम कहाये।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - बिना बरखा के बिजुरिया ...)

अपना मालिक गंगाराम हमको, दुनिया से क्या काम,
पंचदेव के मंदिर में है अपने चारों धाम।

झुंझनूं में है पंचदेव का मंदिर बड़ा ही भारी,
बैठा है दरबार लगा के विष्णु का अवतारी,
शिव परिवार के साथ है लक्ष्मी, दुर्गा और हनुमान ।।1।।

जब-जब पाप अधर्म धरा पे हद से ज्यादा बढ़ता,
विष्णु को तब धरती पर अवतार है लेना पड़ता,
जैसे त्रेता में रघुनन्दन, द्वापर में घनश्याम ।।2।।

बाबा के दरबार में 'सोनू' जब से बने हैं चाकर,
सँवर गई है किस्मत अपनी शरण में इसके आकर,
देख हमारे ठाठ-बाट को दुनिया है हैरान ।।3।।

कलियुग में प्रगटे प्रभु, विष्णु के अवतार।
सत्य धर्म का धाम है, पंचदेव दरबार।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - बचपन की मोहब्बत...)

भक्तों से कभी बाबा यूँ रहते दूर नहीं।
हम तो मजबूर हैं पर, तुम तो मजबूर नहीं ।।टेर।।

तेरे दरश को गंगाराम, मेरे नैन तरसते हैं,
रूकते नहीं पल भर भी, दिन रात बरसते हैं,
तुमसे हम दूर रहें, दिल को मंजूर नहीं ।।1।।

लेनी है परीक्षा तो, तू और कोई ले ले,
गम तेरी जुदाई का, कैसे तू बता झेलें,
भक्तों को तड़फाना, तेरा दस्तूर नहीं ।।2।।

आ जा झुंझनूं वाले नहीं और सहा जाए,
जीवन का भरोसा क्या नहीं देर ना हो जाए,
दिल टूट के 'सोनू' का, हो जाए चूर नहीं ।।3।।

बाबा गंगाराम हुये हैं, विष्णु के अवतारी।
धाम झुंझनूं दर्शन करने, आती दुनिया सारी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - होलिया में उड़े रे गुलाल ...)

तेरे भरोसे मेरी गाड़ी, तू जाणै तेरा काम जाणै,
तू जाणै तेरा काम जाणै - 2

तेरे होते मैं क्यू रोऊँ,
खूँटी तान के मैं तो सोऊँ,
म्हाने तो मिलगी आजादी। तू जाणै...

म्हारी गाड़ी का थे हो ठाकर,
म्हें तो हॉ चरणां का चाकर,
म्हारी तो किस्मत जागी। तू जाणै...

म्हानै तो अब डर कोनी लागै
गंगारामजी म्हारै सागै,
थारी सकलाई घणी ठाडी। तू जाणै...

भोत बड़ो हूँ मैं किस्मतवालो,
म्हारो साथी झुंझनूंवालो,
'श्याम' की लगन थांसू लागी। तू जाणै...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अगर तुम मिल जाओ...)

ये बाबा मेरा है ये सबसे बोल देंगे हम।
तोड़ के दुनिया से रिश्ता, तुम्हीं से जोड़ लेंगे हम।।

तुम्हारा ही भरोसा है तुम्हारा ही सहारा है,
हे गंगाराम बाबा बस, तेरा ही नजारा है,
बस यही विनती है, पास रहना मेरे हरदम।। तोड़ के...

जो कुछ भी पास है मेरे तुम्हारी ही मेहरबानी,
तुम्हारी ही दया से तो चले मेरा दाना पानी,
झुंझनूं बुलवाले, सफल हो जाएगा तन-मन।। तोड़ के...

मैं बेटा हूँ तेरा बाबा, मुझे एक बार कह दे तू,
'श्याम' को देकर के सेवा थोड़ा उपकार कर दे तू,
अगर तुम अपना लो, जमाना छोड़ देंगे हम।। तोड़ के...

मल धोये गंगा सलिल, असुर संहारे राम।
दोनों कारज सिद्ध करे, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मीठे रस सूं भरेड़ी ...)

म्हें तो झुंझनूं की धरती ऊपर, जावां वारी जी-२
जठे विराजे म्हारो बाबो विष्णु को अवतारीजी।

कितनो सोणो कितनो प्यारो मंदिर थारो लागै,
पंचदेव दरबार सज्यो है गंगारामजी सागै,
थारी सुरतियां नै देखो, निरखे दुनिया सारी जी-2,
जठे ... ।।1।।

गंगादशहरो को बाबाजी जद-जद मेलो आवै,
दरशन कर लेवै जो प्राणी जंइया कुंभ नहावै,
सारी दुनिया जाण गई है, यो है संकटहारी जी-2,
जठे ... ।।2।।

धोरां री धरती कै ऊपर ऐंकी शान निराली
'श्याम' की बगिया का थे बाबा बन बैठा बनमाली,
थारे दर पे बाबा हरदम, भीड़ लागै भारी जी-2
जठे ... ।।3।।

दायें भाग शिव लक्ष्मी, हनुमत दुर्गा वाम।
सबके मध्य विराजते, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - आज मेरे यार की शादी है ...)

आज गंगाराम पधारे हैं, मेरे भगवान पधारे हैं।
सारे जगत के देखो पालनहार पधारे हैं।।

बड़ा दरबार निराला, आया रे झुंझनूंवाला,
कैसे संयोग बने हैं, ज्योति का हुआ उजाला।
श्रद्धा से सर को झुकाए, प्रेम से इनको मनाए,
ओSSS माँ लक्ष्मी के प्यारे, गंगाराम पधारे हैं।।
आज गंगाराम... ।।1।।

दर पे खुशिया हैं छाई, भजनों की शाम है आई,
दर्श करने को दर पे, आज दुनिया है आई।
खुशी से झूमे है मन, मिले भक्तों से भगवन,
ओSSS बाबा की किरपा ने, सारे काम संवारे हैं।।
आज गंगाराम... ।।2।।

तेरी किरपा से बाबा, मेरा हर काम हुआ है,
रहे खुशियों से भरा मन, मेरी बस ये ही दुआ है।
किसी का दिल ना दुखाऊँ, प्रेम से तूझे मनाऊँ,
ओSSS 'गोपी' आज की शाम मेरे भगवान पधारे हैं।।
आज गंगाराम ... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - क्या मिलिए ऐसे लोगो से...)

गंगा जैसा नाम है पावन, बाबा गंगाराम का,
इनको भजले पुण्य मिलेगा, तुमको चारों धाम का।

चारों धाम के दर्शन का फल, झुंझनूं धाम में पाओगे,
गंगाराम के दर पे जब, भक्ति से शीश झुकाओगे,
शाम सबेरे भज के देखो, चमत्कार इस नाम का।।
इनको भजले ...

विष्णु के अवतारी बाबा कलियुग में अवतारे हैं,
दीन दुखी निर्बल के बाबा गंगाराम सहारे हैं,
इक माला इस नाम की फेरो क्या है भरोसा शाम का।।
इनको भजले ...

देवकीनन्दन ने भक्ति से, अपना हाथ उठाया था,
पंचदेव दरबार लगा, मंदिर प्यारा बनवाया था,
'गोपी' देश विदेश में गूंजे, डंका इनके नाम का।।
इनको भजले...

कृष्ण अष्टमी को हुये, नवमी को श्रीराम।
दशमी तिथि को हुये प्रगट, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - फूल तुम्हें भेजा है...)

दास खड़ा है दर पे तेरे, मनवा मेरे आकुल है,
दर्शन दे दो झुंझनूं वाले, तेरे दरश को व्याकुल हैं।

विष्णु रूप का दर्श दिखाकर, बाबा मेरा उद्धार करो,
जनम-जनम के पाप हमारे बाबा गंगाराम हरो,
आस भगत की टूट न जाये, आज दया करतार करो।
दास खड़ा.... ।।1।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, चरणों की रज दे देना,
मधुर कंठ से करूं वंदना, शरण तुम्हारी ले लेना,
हाथ तुम्हारा सिर पे धरके, दान दया का दे देना।
दास खड़ा.... ।।2।।

'हर्ष' सुना है निज भगतों की, हरदम तू सुनता आया,
मुझसे कैसे खता हुई जो, मुझको इतना तरसाया,
आस का दीपक बुझ जायेगा, तूने गर जो बिसराया।
दास खड़ा.... ।।3।।

पावन नाम तुम्हारा बाबा, पावन झुंझनूं धाम।
रोम रोम में तुम्हीं बसे हो, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - आवाज देकर हमें तुम ...)

बाहें पसारो, हे बाबा बचालो,
कहीं गिर न जाएं, जरा तुम उठाओ ।टेर।।

मिली ठोकरें जिन्दगी में हमेशा,
सदा हर घड़ी में रहा हूँ परेशां,
दया अब जरा सी हे बाबा दिखाओ।। कहीं गिर... ।।

मैं बरसों से हर हाल में घुट रहा हूँ,
मैं माया के मोह जाल में फंस रहा हूँ,
मेरे दुखड़े आके, हे बाबा मिटाओ।। कहीं गिर... ।।

तू गंगा सा पावन, है अमृत की धारा,
तू ही राम मेरे, तू ही है सहारा,
गले से मुझे भी हे बाबा लगाओ।। कहीं गिर... ।।

सदा दीन का साथ तुमने दिया है,
हे झुंझनूं के वासी क्यूं रूठा हुआ है,
मेरी 'हर्ष' भूलें हे बाबा भुलाओ।। कहीं गिर... ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - इस दर्द भरी...)

तेरी ज्योति ओ बाबा जलती रहे,
तेरे भक्तों को सेवा मिलती रहे,
मैं रहूं ना रहूँ इस दुनिया में,
तेरा कीर्त्तन ओ बाबा यूं ही होता रहे।।

बाबा गंगाराम के संग में शिव परिवार विराजे,
दुर्गा, लक्ष्मी, हनुमत के संग भक्त शिरोमणि साजे,
तेरा दरबार यूं ही लगता रहे, पंचदेवों के संग तू सजता रहे।
मैं रहूँ ना रहूँ... ।।1।।

आशीर्वाद दिवस में देवकीनन्दन आशीष पाएं,
गंगादशहरा के दिन तेरा उत्सव सभी मनाएं,
और सावन में झूले लगते रहे, तेरे चरणों की सेवा पाते रहे।
मैं रहूँ ना रहूँ... ।।2।।

बड़ी ही किस्मत 'संजय-नवीन' की तेरी किरपा पाई,
तूने ही तो बाबा भक्तों की तकदीर जगाई,
बाबा जब तक ये चांद और तारे रहे, तेरी सेवा में भक्त ये सारे रहे।
मैं रहूँ ना रहूँ... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - होलिया में ...)

माता लक्ष्मी के जायो लाल, बधाई सारे भक्तां ने,
बाज्यो रे बाज्यो देखो थाल, बधाई सारे भक्तां ने,

चालां जी झुंझनूं के मोदीगढ़ में चालां,
बालक निरखस्यां लूण राई वारां,
गंगाराम लियो अवतार।। बधाई सारे भक्तां ने... ।।1।।

झूंथारामजी बांटे बधाई,
माँ लक्ष्मी के खुशियाँ छाई,
आज सजावां पूजन थाल।। बधाई सारे भक्तां ने... ।।2।।

फूलां को प्यारो-प्यारो पलनो बनावां,
पलना में लाला न झूलावां,
देवां म्हें लूण राई वार।। बधाई सारे भक्तां ने... ।।3।।

विष्णु को अवतारी बण आयो,
बाबा गंगाराम कहायो,
सबने करसी निहाल।। बधाई सारे भक्तां ने... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - भाई रे मत दीज्यो मावड़ली...)

म्हारै सिर पे है गंगारामजी को हाथ, झुंझनूंवाले को साथ
कोई तो म्हारो कांई करसी - 3

जो कोई म्हारै गंगारामजी नै, सांचै मन से ध्यावै,
काल कराल भी बाबाजी कै, भगतां सै घबरावै,
जो कोई पकड्यो है बाबाजी को हाथ,
बीको तो कोई कांई करसी ।।1।।

जो आंपै विश्वास करै बो, खूंटी तान के सोवै,
बठे प्रवेश करे ना कोई, बाल ना बांका होवै,
जांके मन में नहीं है विश्वास,
बीको तो बाबो कांई करसी ।।2।।

कलियुग को यो देव निरालो, जग में नाम कमायो,
जब-जब भीड़ पड़ी भगतां पर, दौड्यो-दोड्यो आयो,
यो तो घट-घट की जाणै सारी बात,
कोई तो म्हारो कांई करसी ।।3।।

बाबा गंगाराम है साँचो, मन सै ध्याकै देखो,
देवकीनन्दन के चरणां की, रज न लगाकै देखो,
पूरी कर देसी सबकी अरदास,
कोई तो म्हारो कांई करसी ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - उमराव ...)

श्री विष्णु को अवतार कुहावै बाबा गंगाराम
गंगारामजी, ओ SSS गंगाराम।

विष्णु अंश से प्रगट भया, करणै जग कल्याण,
सत्य धरम भगवद् भक्ति को, लेकर अद्भुत ज्ञान,
जप-तप पूजन सत् कर्म निभावै, बाबा गंगाराम।
गंगारामजी ओ SSS गंगाराम...

गंगा सा ये पावन है तो, राम प्रभु सा महान,
बड़ा दयालु-बड़ा कृपालु, जाणै सकल जहान,
ये सारा संकट दूर हटावै, बाबा गंगाराम।
गंगाराजी ओ SSS गंगाराम...

आंकी महिमा अनन्त है, गरिमा अमिट अपार,
तब ही आं नै पूज रह्यो, सारो ही संसार,
हर शरणागत की लाज बचावै, बाबा गंगाराम।
गंगारामजी ओ SSS गंगाराम...

जन्मभूमि थी झुंझनूं, बण्यो जो तीरथ धाम,
करमभूमि थी बाराबंकी, सफदरगंज थो नाम,
'रवि' बोलै सबको मान बढावै, बाबा गंगाराम।
गंगारामजी ओ SSS गंगाराम...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थाली भर कर ल्याई खिचड़ो...)

आओ तुमको कथा सुनाएं बाबा गंगाराम की,
सब मिलकर जयकार लगाओ, बाबाजी के नाम की-2 ।टेर।।

नगर झुंझनूं मोदीगढ़ में इनका पावन जन्म हुआ,
झूंथारामजी लक्ष्मीदेवी का भी जीवन धन्य हुआ,
सुन्दर श्याम सलोनी मूरत प्यारी है अभिराम की।
सब मिलकर... ।।1।।

धर्मध्वजा लहराने को ही इनका प्रादुर्भाव हुआ,
देव कार्य हित धरा पे आए दुनिया को ये ज्ञात हुआ,
घर-घर गूंज रही है वाणी बाबा के गुणगान की।
सब मिलकर... ।।2।।

हरि विष्णु का अंश लिए ये, नश्वर जग में आए थे,
कहे 'रवि' कल्याणी के जल में निज छवि दिखाए थे,
इस कलियुग में भारी शक्ति है श्री गंगाराम की।
सब मिलकर...।।3।।

पंचदेव दरबार में, सजे पंच भगवान।
लक्ष्मी दुर्गा शिव कपि श्री गंगाराम सुजान।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - जैसा चाहो मुझको समझना/बंगला गाड़ी...)

गंगा सारे पाप मिटाए, राम हृदय का ताप मिटाए,
दुनिया में सबसे, पावन है नाम, जय गंगाराम बोलो, जय गंगाराम।

इस कलियुग में बाबा की शक्ति को सबने जान लिया,
विष्णु के अवतारी हैं ये जान लिया पहचान लिया,
भजले तू बंदे सुबह और शाम, जय गंगाराम बोलो...।।1।।

झुंझनूं नगरी धन्य जहाँ पर पंचदेव दरबार है,
भगतों के मन का हर सपना हो जाता साकार है,
रूकता नहीं है बंदे कोई भी काम, जय गंगाराम बोलो... ।।2।।

जीवन की नैया का मांझी जिसने इसे बनाया है,
'सूरज' कहता बीच भँवर में साहिल उसने पाया है,
डूबते की बाहें बाबा लेता है थाम, जय गंगाराम बोलो... ।।3।।

गंगाराम रस बहता निर्मला, ज्यों धारा जल गंगा है।
ब्रम्ह शक्ति का संगम है, यहाँ मिली राम संग गंगा है।

।। ॐ ।। जय हो पंचदेव दरबार की ।। ॐ ।। जय हो बाबा गंगाराम की ।। ॐ ।। जय हो झुंझुनूंधाम की ।। ॐ ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अफसाना लिख रही हूँ...)

चर्चा है गली - गली में, श्री गंगाराम की,
माया है अजब निराली, बैकुण्ठ धाम की।

है भाग्य बड़े झुंझनूं के, जो धाम बन गया - 2
विष्णु अवतारी बाबा, गंगाराम बन गया - 2
भक्ति से मिलती शक्ति, ये बात है काम की।
माया है ... ।।1।।

विश्वास नहीं तो बंदे, तू आ के देख ले-2
मांगे जो वही मिलेगा, तू पा के देख ले-2
मिल जाएगी तुझे कृपा, बाबा के छाँव की।
माया है... ।।2।।

भूल के खुद को जिसने, इसे अपना मान लिया-2
उसने ही 'सोनी-मारवाल', इस भेद को जान लिया-2
खुद करता है ये चिंता, उसके सुबहो शाम की।
माया है... ।।3।।

धन्य झुंझनूं धाम में, पंचदेव दरबार।
प्रगटे बाबा गंगाराम, विष्णु के अवतार।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - जे हम तुम चोरी से ...)

प्रेम से बोलो रे, कि सब मिल बोलो रे जय-जय गंगाराम,
बड़ा पावन ये नाम है, बड़ा प्यारा ये नाम है ।टेर।।

राम बने कभी कान्हा, तुम हो जग के रखवाले,
कलियुग में प्रभु आके, कहलाते झुंझनूंवाले,
भक्तों के, ये हरे, ये हरे, दुखड़े तमाम है ।।1।।

देवकीनन्दनजी को, सपने में दरश दिखाए,
जग कल्याण के खातिर, मूरत में आये समाए,
आज हम, सब करें, सब करें, शत् शत् प्रणाम है ।।2।।

हे विष्णु अवतारी, सच्चा है तेरा द्वारा,
जिसने अपना माना, उसे भव से पार उतारा,
सुलझेंगे वो सभी, वो सभी, उलझे जो काम है ।।3।।

गंगाराम है गंगाजल सम, गोता रोज लगाओ।
मान मनौती ध्यान लगाओ, मन इच्छा फल पाओ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - आधा है चंद्रमा...)

बाबा गंगाराम प्रभु राम बन गए
देवकीनन्दनजी, हनुमान बन गए... 2

गंगारामजी का आदेश पाया,
प्यारा मंदिर झुंझनूं में बनवाया,
बैठे पंचदेव साथ, हुए फूलों की बरसात,
भक्त शिरोमणि देखो महान बन गए, हनुमान बन गए।
बाबा गंगाराम.... ।।1।।

सच्ची भगती का परचा दिखाया,
हाथ जलती चिता से उठाया,
लेके चरणों की रज, गंगारामजी को भज,
सांची भगती की ये पहचान बन गए, हनुमान बन गए।
बाबा गंगाराम.... ।।2।।

गंगारामजी का मंदिर जहाँ पे,
बनी सुंदर समाधि वहाँ पे,
ले समाधि की धूल, खिले जीवन में फूल,
लाखों भक्तों के 'श्याम' वहाँ काम बन गए, हनुमान बन गए।
बाबा गंगाराम.... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धरती धोरां री ...)

श्रावण शुक्ला दशमी आई, कैसी पावन घड़ीयाँ ल्याई,
खुशियाँ भोत घणेरी छाई, देखो झुंझनूं में - 3

झूंथारामजी हरख मनावैSSS, मातालक्ष्मी वारी जावै,
गीगो गोद्या माँहि खिलावै, देखो झुंझनूं में,
सूरज सोना रो उग आयो, जग को मान बढावण आयो,
सबकै मन में आनन्द छायो, देखो झुंझनूं में ...।।1।।

घर-घर मांही बंटी बधाईSSS, निरखण आया लोग लुगाई,
निजरां बालक की उतराई, देखो झुंझनूं में,
बाजै ढप-ढोलक शहनाई, मंगल सखियाँ मिलकै गाई,
माता लक्ष्मी नेग चुकाई, देखो झुंझनूं में ... ।।2।।

मुहूरत नामकरण को आयोSSS, कुल पुरोहित नै बुलवायो,
बालक देख के अचरज छायो, देखो झुंझनूं में,
बोल्यो बालक है अवतारी, महिमा बड़ी विलक्षण न्यारी,
बणसी जग को पालनहारी, देखो झुंझनूं में ... ।।3।।

बालक गंगा सो है पावनSSS, भगवन राम सो है मनभावन,
लाग्या गंगाराम पुकारन, देखो झुंझनूं में,
कितनो प्यारो नाम है राख्यो, सगला कै ही मनड़ो भायो,
महिमा दास 'रवि' बतलाय्यो, देखो झुंझनूं में ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ये गोटेदार लहंगा...नखराली चाल में...)

घर-घर में पूजा हो रही बाबा गंगाराम की,
दुनिया दिवानी हो गई बाबा के नाम की।।

विष्णु के अवतारी हैं ये, इनकी अमर कहानी-2
अपने भक्तों की बाबाजी, सदा करे रखवाली-2
महिमा निराली जग में, बाबा गंगाराम की।।
दुनिया दिवानी...

पंचदेव दरबार निराला, महिमा जिसकी न्यारी-2
बिन मांगे ही झोली भर दे, ये विष्णु अवतारी-2
नैया जो अटकी हो तो, कर दे ये पार जी।।
दुनिया दिवानी...

'सेवा समिति' बाबाजी की, महिमा हरदम गावे-2
गंगाराम पर एक भरोसा, वो ही पार लगावे-2
जपले तू माला इनकी, सुबह और शाम जी।।
दुनिया दिवानी...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थे तो आरोगाजी मदन गोपाल ...)

चालो-चालोजी थे चालो झुंझनूं धाम, बुलावै गंगाराम धणी,
थारी मनसा पूरी करसी गंगाराम, कहग्या भक्त शिरोऽऽमणी।।

झुंझनूं मांही पंचदेव को, मंदिर अद्भुत न्यारो,
दूर-दूर से दर्शन करने उमड़ रह्यो जग सारो,
होवै भीड़ घणेरी दर पर सुबह-शाम, लाखां की है बिगड़ी बणी।

मन्दरियै में बैठकर आपां चोखा भजन सुनावांगा,
बाबाजी के मंड के आगे, झूमां नाचां गावांगा,
करस्यां बाबाजी के चरणां में प्रणाम, बोलांगा म्हें खम्मा है धणी।

निर्धन न धनमाल लुटावै, कोड्या रो कोड़ मिटावै,
बांझन के घर लाल खिलावै, गहरो सुख बरसावै,
आकै दर पर सबका बन जावैला काम, जग बोले है सांचा है धणी।

बाबाजी का दर्शन करस्यां, मन का सुख दुख कहस्यां
'रवि' कहवै सब धोक लगास्यां, बांका आशीष पास्यां,
बांकै चरणां मांही मिल जासी आराम, सुख की बिरखा होवैगी धणी।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सोलह बरस की बाली उमर को...)

पंचदेवों की उस पावन धरा को प्रणाम,
ओ बाबा तेरे झुंझनूं नगर को प्रणाम ।।टेर।।

झुंझनूं में सबसे पहले दर्शन जिसे मिला,
झुंझनूं में धाम बनाया उस भक्त को प्रणाम,
कहते हैं देवकीनन्दन भक्त शिरोमणी,
ऐसे दीवाने भक्त की उस भक्ति को प्रणाम।
ओ बाबा तेरे...

दुनिया ने देखा बाबा, जो चमत्कार तेरे यहां,
उस जगह उस समाधि की धूलि को प्रणाम,
जिसने अपने सत् से विधि को किया विवश,
दयामयी, ममतामयी, मां गायत्री को प्रणाम।
ओ बाबा तेरे...

झुंझनूं से चलकर तेरे कीर्त्तन में आ गई,
निर्मल सुहानी पावन इस ज्योत को प्रणाम,
होता रहे ये कीर्त्तन तेरा सदा-सदा,
कीर्त्तन में आने वाले इन भक्तों को प्रणाम।
ओ बाबा तेरे...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धरती सुनहरी अम्बर नीला ...)

क्या बैकुण्ठ क्या स्वर्ग का करना, हमको प्राणों से प्यारा,
झुंझनूं धाम हमारा ओऽऽऽ - 2
आके यहाँ भक्तों को मिलता पंचदेव का द्वारा,
झुंझनूं धाम हमारा ओऽऽऽ - 2

झुंझनूं की माटी से, चंदन की खुशबू आए,
जो करता है हमारा, हम झुंझनूं में रह जाए,
इस माटी का तिलक लगालो कष्ट मिटेगा सारा ।।1।।

वहाँ शिखर बंद के ऊपर, एक धर्मध्वजा लहराए,
सूरज की पहली किरणें, यहाँ आकर शीश नवाए,
त्याग, तपस्या सत्य का देखो, मिलन वहाँ पे न्यारा ।।2।।

शिव परिवार के संग में, बैठी माँ अम्बे भवानी,
यहाँ हनुमत संग विराजे, माँ विष्णु प्रिया महारानी,
चरणों में बैठे भक्त देवकी, ले बाबा का सहारा ।।3।।

यहाँ की बालू माटी, भी देती यही गवाही,
बनी समाधि गया वो, जब मुक्ति पथ का राही,
उसी सामधि से हरता है, भक्तों का दुख सारा ।।4।।

ऊंचे सिंहासन बैठे, यहाँ विष्णु के अवतारी,
गंगाराम कहती है, जिनको ये दुनिया सारी,
पंचदेव दरबार के आगे, झुकता है जग सारा ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - चाहा है तुझको चाहूँगा हरदम...)

कहना मत बाबा ये सबके सामने, आता हूँ हरदम मैं तुमसे मांगने
जो जान वो जाएँगे, मेरी हँसी उड़ायेंगे।।

धन और दौलत तो खेल है नसीब का,
लाज ही तो होता है गहना गरीब का,
जो लाज गंवायेंगे, वो फिर कहाँ जाएंगे। कहना....।।

अपने ये समझते कि मैं ही घर चला रहा,
जानेंगे अगर वो कि मांग के मैं ला रहा,
वो अंगुली उठायेंगे, मेरा मान घटायेंगे। कहना....।।

मेरे रोज आने पर हो कोई सवाल तो,
कह देना मिलने बुलाया तूने लाल को,
सब चुप हो जाएंगे, हम खुश हो जाएंगे। कहना....।।

क्या जाने हम, कब ढल जाये इस जीवन की शाम।
सच्चे दिल से बोलो भक्तों, जय-जय गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - छुप गये सारे नजारे ...)

घर-घर यही है चर्चा एक अवतार आये हैं,
हरने भक्तों के दुखड़े गंगाराम आये हैं ।टेर।।

है कलिमलहारी, ये विष्णु अवतारी,
है शक्ति बड़ी ही भारी,
बना झुंझनूं में मन्दिर निराला है,
सारे देवों में देव ये आला है,
चहुंदिश बजे है डंका जग गुणगान गाये हैं,
हरने भक्तों.... ।।1।।

यही है रमैया, यही है कन्हैया,
नैया के ये ही खेवैया,
किस्मतवाले ही दर पे आ पाते हैं,
बदनसीबों के ताले खुल जाते हैं,
मिट गये संकट उसी के, जो भी द्वार आये हैं,
हरने भक्तों .... ।।2।।

धन नहीं मांगू मैं बल नहीं मांगू,
चरणों की धूली मैं मांगू,
मन के मन्दिर में तुमको मैं बसाऊंगा,
तुझे दिल से मैं अपना बनाऊंगा,
सच-सच 'राधे' कहे जो मन में भाव आये हैं,
हरने भक्तों .... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - चूड़ी जो खनकी हाथों में...)

त्रेता में जनम्या रामजी,
कलियुग में लियो अवतार बाबा श्री गंगारामजी ।टेर।।

धन्य झुंझनूं नगरी है, बाबाजी अवतार लियो,
निज भक्तां कै मंगल को, कांधे ऊपर भार लियो,
गूंजे है जग मं नाम जी।। कलियुग में.... ।।1।।

बाबा बनकर नारायण, आप धरा पर आयाजी,
बजरंग शिव दुर्गा मैया, लक्ष्मी सागै लायाजी,
पंचदेव थारो धामजी।। कलियुग मे .... ।।2।।

बच्चा, बूढा नर नारी, थानै शीश झुकावै है,
बाबै के दरवाजे सूं झोली भरकर ल्यावै है,
पूजे है सुबह ओ शामजी।। कलियुग में .... ।।3।।

जद-जद पाप बढ्यो जग में, भक्तां पर संकट आयो,
भक्तां की रक्षा तांई, 'हर्ष' देव दौड्यो आयो,
जय बोलो झुंझनूं धाम की।। कलियुग में .... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला ...)

ओ बाबा विष्णु के अवतारी, तुमको ध्याऊँ रे,
दर तेरे आऊँ, शीश झुकाऊँ, किरपा पाऊँ रे।।

विश्व शान्ति के खातिर, आप धरा पर आये,
जग के हर कोने में, धर्म ध्वजा फहराये,
गुण तेरा गाऊँ, जग को बताऊँ, तुझको चाहूँ रे ।।1।।

नगर झुंझनूं में बाबा, मन्दिर बड़ा निराला,
सबके संकट हरता, संकट हरने वाला,
दिल में हमारे, नाम की तुम्हारे, ज्योत जलाऊँ रे ।।2।।

जब-जब संकट आया, आप यहाँ अवतारे,
'हर्ष' कहे भगतो को, भव से पार उतारे,
भजन बनाऊँ, सबको सुनाऊँ महिमा गाऊँ रे ।।3।।

गंगाराम जपे से भक्तों, आत्मशक्ति बढ़ जाती है।
माया के बन्धन कटते हैं, और मुक्ति मिल जाती है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धमाल...)

मतना नाटोजी बाबाजी थारै क्यां को घाटोजी,
मतना नाटोजी,
भर्‌या पड्‌या भण्डार आपका क्यूं ना बांटोजी,
मतना नाटोजी।

बड़ी दूर सै आशा लेकर, धाम झुंझनूं आयाजी,
इब तो म्हारै फंद गलै को, क्यूं ना काटोजी,
मतना... ।।1।।

पंचदेव कहलावो बाबा, थे मायत म्हें टाबरजी,
मायत होकर टाबरियां सै, क्या को आंटोजी,
मतना... ।।2।।

ना हाथां सै देवो म्हानै, ना मुँह सै कुछ बोलोजी,
देख ढिठाई होगो म्हारो, मनड़ो खाटोजी,
मतना... ।।3।।

इतनी सुनकर बाबो म्हारो, खोल दियो है खजानोजी,
दोनूं हाथ लुटावै लूटो, मार झपाटोजी,
मतना... ।।4।।

गंगाराम के महामंत्र में, गंगा है और राम है।
गंगाजल में निर्मलता है, राम में आराम है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - हद कर दी आपने ...)

झुंझनूं नगरी बड़ी निराली लगती प्यारी - प्यारी,
जहाँ विराजे गंगारामजी विष्णु के अवतारी,
सभी देवता जिन पर करते फूलों की बरसात है।
वाह-2 क्या बात है - 2

पंचदेव के मंदिर की, देखो शान निराली है,
इनके भक्तों के घर में रोज ही होली दिवाली है,
डर नहीं लगता उन भक्तों को बाबा जिनके साथ है।
वाह-2 क्या बात है - 2

रूप तुम्हारा देख के बाबा चाँद सितारे शरमाए,
बाबा गंगाराम से मिलने सभी देवता हैं आए,
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन बैठे जिनके साथ है।
वाह-2 क्या बात है - 2

गंगारामजी का दरशन करने आए भक्त हजार हैं,
'श्याम' कह रहा झुंझनूंवाला लुटा रहा भण्डार है,
जितना चाहे उतना लूटो कीर्त्तन की ये रात है।
वाह-2 क्या बात है - 2

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - नफरत की दुनिया को...)

वरदान ऐसा दो मेरी हर, सांस से निकले, बाबा तेरा ही नाम
मैं भूल से भी भूल ना जाऊँ, तुझे बाबा, जय-जय-जय गंगाराम।

अन्जान राहों का, तू ही तो है साथी,
संसार सागर में, तू ही मेरा मांझी,
विश्वास को मेरे अगर जो, तू ही तोड़ दे,
कैसे चले मेरा काम... ।।1।।

तेरे नाम की शक्ति, संसार ने मानी,
तेरे दास की भक्ति, कोई नहीं शानी,
माया के रिश्तों को तोड़कर, तुमको थामा था,
पाया तेरा ही धाम... ।।2।।

अब नाम तेरा ही, दुनिया में गूंजेगा,
बस एक ही झण्डा, त्रिभुवन में फहरेगा,
गर साथ तेरा हाथ तो, 'सूरज' भी ढ़ल जाये,
कभी ना ढ़ले मेरी शाम... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मैं तो कबसे खड़ी उस पार ...)

मेरे, बाबा गंगाराम, सुहाना लागे, बाबा तेरा नाम,
ओ लागे रेऽऽऽ बड़ा प्यारा-2 ।।टेर।।

घर-घर में है चर्चा भारी, आये हैं विष्णु अवतारी,
गूंज रही है जय-जयकारी ओऽऽऽ ओ लागे रे ।।1।।

झुंझनूं धाम की महिमा निराली, दर पे आये जो भी सवाली,
भर-भर जावे झोली खाली ओऽऽऽ ओ लागे रे ।।2।।

शीश मुकुट कुण्डल मनुहारी, हृदय में बस गई सूरत प्यारी,
दीनन के बाबा तुम हितकारी ओऽऽऽ ओ लागे रे ।।3।।

धन्य हुई है मरूधर सारी, हर्षित हैं लाखों नर नारी,
तुम्हीं राम तुम कृष्ण मुरारी ओऽऽऽ लागे रे ।।4।।

जो जांहि के चित्त चढ्‌यो, सो तांहि को राम।
अपने तो हरि आप हैं, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - वो दिल कहाँ से लाऊँ ...)

कण-कण से गूंजती है, बाबा तेरी कहानी,
गुणगान क्या करें हम, जाती नहीं बखानी ।।टेर।।

ओ गंगाराम बाबा, तेरा चक्र चल रहा है,
तेरा नाम ही जगत का, उद्धार कर रहा है,
युग-युग में तुम ही आते, ये रीत है पुरानी,
कण - कण से... ।।1।।

तेरा पंचदेव मंदिर, है इक महान तीरथ,
धरते ही पांव होते, पूरे सभी मनोरथ,
चरणों की तेरी धूली, माथे से है लगानी,
कण - कण से... ।।2।।

हे राम तेरी गंगा, कलियुग में बह रही है,
भगतों के पाप हरकर, भव पार कर रही है,
जन-जन के पूज्य हो तुम, दुनिया तेरी दिवानी,
कण - कण से ... ।।3।।

निर्बल के बल तुम्हीं हो, दीनों के नाथ हो तुम,
दुखियों के तुम सहारे, भक्तों के साथ हो तुम,
कहता है 'प्रेम' बाबा, तुमसा नहीं है दानी,
कण - कण से... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मिठाई लेल्यो ...)

चालो चालो रे झुंझनूं धाम, सुणी रे सांची सकलाई,
जठे धोरां पै विराजै गंगाराम, सुणी रे सांची सकलाई।।

अन्न धन रा भण्डार भरै और निर्मल होज्या काया,
बाबा गंगाराम शरण है, कल्पतरू की छाया,
बिन मांग्या मिलै रे आराम।। सुणी रे... ।।1।।

तू बाबा को, बाबो तेरो, फिर क्यां नै मजबूर,
खीर चूरमो खातां ही सब विपदा होज्या दूर,
थारी कौड़ी लगै ना छदाम।। सुणी रे ... ।।2।।

भाव को भूखो भाव ही जीमै, भाव परोसण आजा,
सरल भाव सै बणतां देख्या अठै रंक सै राजा,
कर ले श्रद्धा सै लुढ़-लुढ़ प्रणाम।। सुणी रे... ।।3।।

लाखां को ही कष्ट हर्‌यो, लाखां का कारज सार्‌या,
लाखूं लोग ही बाबाजी की घर-घर ज्योत जगार्‌या,
गंगारामजी बण्या रै सुखधाम।। सुणी रे... ।।4।।

राजयोग में 'राजेन्द्र' भी नाथ शरण मँ आयो,
विष्णुयोग में बाबा गंगाराम की महिमा गायो,
थारी ज्योति जगै अविराम।। सुणी रे... ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - आज मेरे यार की शादी है...)

आज शुभ गंगादशहरा है - 2
ओऽऽऽऽ पंचदेव मंदिर में सूरज उगा सुनहरा है।

समय है खुबसूरत, बड़ा शुभ लग्न मुहूरत,
झुंझनूं धाम विराजे, बाबा की मोहिनी मूरत,
ओऽऽऽऽ फैला प्रेम प्रकाश मिटा, अज्ञान अंधेरा है ।।1।।

हो रहा जै-जैकारा, हर्ष चहुँ ओर अपारा,
बाबा की भक्ति रंग में, मगन सारा संसारा,
ओऽऽऽऽ धूम मची है सारे जग में, हुआ सबेरा है ।।2।।

धरा पर विष्णु आये, जो गंगाराम कहाये,
करे सब आशा पूरी, शरण जो इनकी आये,
ओऽऽऽऽ तीन लोक चौदह भुवन में, सब कुछ तेरा है।।3।।

लगी है भक्त कतारें, सभी विपदा के मारे,
ध्यान में तेरे सब हैं, भक्त निज तन मन वारे,
ओऽऽऽऽ भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, चरण बसेरा है।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - नगरी - नगरी द्वारे - द्वारे ...)

गंगाराम नाम की मैंने ओढ़ी रे चदरिया,
ये चादर तो मैं अब ओढूं, सारी ही उमरिया ।।टेर।।

राम नाम से रंगी ये चादर, गंगाजल में डूबी रे-2
पक्का रंग रंगा है इसमें, ये ही इसकी खूबी रे-2
इसको पहन के निर्भय डोलूं, जीवन की डगरिया।
गंगाराम नाम... ।।1।।

भक्त शिरोमणि ने जीवनभर, ये चादर ही ओढ़ी थी-2
गंगाराम नाम अमृत पी, प्रीत प्रभु से जोड़ी थी-2
जग को छोड़ा पर नहीं छोड़ी, बाबा से लगनियां।
गंगाराम नाम... ।।2।।

अब तो लगन एक ही लागी, जनम-जनम गुण गाऊँ मैं-2
बाबा गंगाराम प्रभु अब, कैसे तुझको पाऊँ मैं - 2
ऐसा वर दो मैं बस जाऊँ, झुंझनूं नगरिया।
गंगाराम नाम... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थे तो आरोगा जी मदन गोपाल ...)

जीमो-जीमोजी थे बाबा गंगाराम,
जिमावां थानै मिजमानी... ।।

ऊंचे आसन आय विराजो, क्या नै करो उवाँर
चरण धोय चरणामृत लेवां sss - 2,
लेवां जी जनम सुधार... ।।1।।

खीर चूरमों, बरफी-पेड़ा, पिस्ता सै भरपूर,
सीरो-दाल मगज का लाडू sss - 2,
खूब बनाया मोतीचूर... ।।2।।

पतला-पतला फलका चावल, पंचमेल को साग,
बड़ा पकोड़ी और कचोड़ी sss - 2
मुठड़ी बनाया पेठापाक... ।।3।।

मीठा चावल, राम खीचड़ी, पूरी मसालेदार,
अमरस भोजन खूब बण्यो है sss - 2
कैरी रो छमक्यो अचार... ।।4।।

पापड़, फलिया और कुरेड़ी, चटनी मजेदार,
छप्पन भोग, छत्तीसो व्यंजन sss - 2
छाछ बणायी है अबार... ।।5।।

ठंडो जल गंगा रो पाणी, नागर पान चबाय,
जीम - जूठ कर आडा होल्यो sss - 2
चरणां मं राखो लिपटाय ... ।।6।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मणिहारी का वेष बनाया ...)

आज गंगादशहरा आया, चलो बाबा ने हमको बुलाया।

आज बरसे रे अमृत की धारा,
सबसे पावन दिवस ये हमारा,
आज हमने जो मांगा सो पाया ।।1।।

आज के दिन पधारे हैं बाबा,
फैली दुनिया में बाबा की आभा,
हमने भक्ति का आशीष पाया ।।2।।

देवकी ने जो देखा था सपना,
आज के दिन हुआ है वो अपना,
उनके सपने की है ये माया ।।3।।

देवकी भक्त जैसा न दूजा,
जिसने भावों से बाबा को पूजा,
पंचदेवों का मन्दिर बनाया ।।4।।

जो भी 'राजेन्द्र' करते हैं सेवा,
वो ही पाते हैं सेवा से मेवा,
सेवा करने का अवसर आया ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थोड़ा सा प्यार हुआ है ...)

प्यारा दरबार सजा है, प्यारी है झांकी,
और तो सब आए हैं sss -2, तेरा आना है बाकी।

गौरी सुत देव गजानन्द, संग रिद्ध-सिद्ध ले आए,
हाथ डमरू बजाते, भोला शंकर भी आए,
इनके संग में आई है, मात मेरी गौराजी।
प्यारा दरबार... ।।1।।

हाथ में घोटा लेकर, वीर बजरंगी आए,
मात लक्ष्मी भी आई, हाथ मोहरें लुटाए,
सिंह पे चढ़के देखो, मात अम्बे भी विराजी।
प्यारा दरबार... ।।2।।

लगन बाबा की लगाए, भक्त शिरोमणि आए,
देवकी की अर्जी सुन, बाबा कैसे रह पाए,
'नवीन' सब झूमो नाचो, बाबा ने आने की हां की।
प्यारा दरबार... ।।3।।

नृसिंह रूप प्रभु आप हैं, छवि बड़ी अभिराम।
भक्त शिरोमणि का कथन, बाबा गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - इतनी शक्ति हमें देना दाता ...)

इतनी शक्ति हमें देना बाबा, ऊंची रहे तेरे धर्म की पताका,
तेरी लीला हर घर में पहुंचे, चक्र चलता रहे इस प्रथा का।

नाम पावन है निर्मल तुम्हारा, जग के तुम ही हो पालनहारा,
प्रभु तुम ही हो त्रैलोकस्वामी, सुन ले मन की ओ अन्तर्यामी,
हो सबेरा अन्त हो निशा का, दे दो आशीष बुद्धिमता का,
तेरी लीला... ।।1।।

कितने पावन थे जीवन था सादा, हुआ पूरा हर एक वादा,
तुम हो तरूवर हम हैं लताएं, दे दो वर ताकि सबको बताएं,
तू ही रहबर है हर एक दिशा का, क्या है कहना तुम्हारी ममता का,
तेरी लीला... ।।2।।

ये रोम-रोम तेरा ऋणी है, जो है तेरा वो इंसा धनी है,
तुमको विश्वास जिसने दिखाया, बन गया तू उसी का सरमाया,
मान रखेंगे तेरी ध्वजा का, दण्डनायक तू सबकी खता का,
तेरी लीला... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धमाल ...)

झुले पालणै मं झुथारामजी रो राजदुलारो रे,
माँ लक्ष्मी रो लाल सुरंगो लागै प्यारो रे।।

नगर झुंझनूं जनम्यो लालो चक्र सुदर्शनधारी रे,
वैष्णव कुल मं आयो यो, विष्णु अवतारी रे ।।1।।

पास पड़ोसन पीलो गावै लक्ष्मीजी हर्षावै रे,
नर नारी सब झूमै गावै, लाड लडावै रे ।।2।।

सोहन थाल बजै आंगन मं, द्वार बजै शहनाई रे,
शंख बजावण स्वर्गलोक सै, परियाँ आई रे ।। 3।।

ब्रह्माजी लीलाधारी नै, निरख-निरख सुख पावै रे,
शिव शंकरजी सुरंगा सै, फुलड़ा बरसावै रे ।।4।।

झुंझनूं को गढ़ पूजन जोगो, पूज रह्या नर नारी रे,
पालणहारो पलणै झूलै, लीला न्यारी रे ।।5।।

देखण में यो दृश्य अनोखो, मनड़ो सबको तरसै रे,
नैणां सै 'राजेन्द्र' प्रेम को सावण बरसै रे ।।6।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अजमल जी रा कंवरा ...)

विष्णु अवतारी भुलूं न एक घड़ी,
भुलूं न एक घड़ी, ओ बाबा थानै भुलूं न एक घड़ी ।टेर।।

माँ लक्ष्मी री कोख सरावां, खूब करां मनुवार,
विष्णु नारायण sss लिन्हो जठे अवतार,
कलयुग अवतारी, भुलूं न एक घड़ी ।।1।।

झुथारामजी रा कुंवर कुहाया, धन-धन झुंझनूं धाम,
शेखावाटी मै sss पूजै थारो नाम,
झुंझनूं अवतारी, भुलूं न एक घड़ी ।।2।।

गंगादशहरो जद-जद आवै, बरसै गगन स्यूं मेह,
बाबा थारै sss चौमासो थारो नेह,
अमृत घटधारी, भुलूं न एक घड़ी ।।3।।

भक्तशिरोमणि थानै पूज्या, पूज रह्यो संसार,
धोरां मैं बाबा sss सज्यो पंचदेव दरबार,
सुदर्शन धारी, भुलूं न एक घड़ी ।।4।।

राज करै 'राजेन्द्र' दिलां पर, लेकर थारो नाम,
स्वीकारो स्वामी sss शत-शत कोटि प्रणाम,
मूरत मनुहारी, भुलूं न एक घड़ी ।। 5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - देखे तेरे संसार की हालत ...)

सब भक्तों के मुख से निकले, इक सुन्दर सा नाम,
जय श्री बाबा गंगाराम - 2

कलयुग में विष्णु अवतारी, प्रगट हुये जग पालनहारी,
गंगा के संग राम जुड़ा है, इसी नाम में शक्ति भारी,
सुबह कहो या शाम कहो, या बोलो आठों याम ।।1।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, मंत्र यही करते थे वन्दन,
हुये समाहित इसी नाम में, जैसे मिलते पानी चन्दन,
त्याग दिया इक पल में जग को, लेकर पावन नाम ।।2।।

राम के संग हनुमान पधारे, कृष्ण वीर अर्जुन को लाये,
बाबा के संग देवकीनन्दन, शोभा मुख से वरणी न जाये,
भक्त और भगवान की जोड़ी, हरती पाप तमाम ।।3।।

क्या करता है तेरी मेरी, छोड़ दे झूठी हेराफेरी,
'सूरज' मौका निकल न जाये, जीवन है छोटी सी फेरी,
ना जाने पापी जीवन की, कब ढल जाये शाम ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - फूल तुम्हे भेजा है खत में ...)

नहीं दिखावा नहीं छलावा, नहीं कोई आडम्बर है,
पंचदेव का धाम निराला, कितना पावन सुन्दर है।

नई साधना, नई उमंगे, नई ब्रह्म की ज्योति है,
विष्णु अवतारी की लीला, नई वहाँ नित होती है,
धरती पर बैकुण्ठ वहीं है, वहीं पे क्षीर समुन्दर है ।।1।।

सोने चांदी हीरों का ना, त्याग वहां का आभूषण,
भक्ति के ही तेजपुंज से, चमक रहा है एक-एक कण,
भक्त शिरोमणि की गाथायें, गूंजे जिसके अन्दर है ।।2।।

काम, क्रोध, पाखण्ड झूठ की, वहाँ न चलती माया है,
बाबा गंगाराम प्रभु ने, अद्भुत चक्र चलाया है,
अमर रहेगी इसकी महिमा, जब तक धरती अम्बर है ।।3।।

जहाँ प्रेरणा जहाँ दिशायें, किस्मत बदले भक्तों की,
माँ गायत्री की ममता से, भरती झोली भक्तों की,
शत-शत वन्दन पुण्यधाम को, करता आज 'देवेन्द्र' है।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - रामायण - चौपाईया ...)

जय श्री गंगाराम, बाबा जय श्री गंगाराम ।।टेर।।

ओऽऽऽ कलियुग के विष्णु अवतारीऽऽऽ,
सुन्दर छवि मन को सुखकारी।। जय श्री....।।

ओऽऽऽ झुंझनूं में दरबार लगायोऽऽऽ,
पंचदेव है नाम कहायो।। जय श्री.... ।।

ओऽऽऽ लक्ष्मी दुर्गा साथ विराजे ऽऽऽ,
हनुमत शंकर संग में साजे।। जय श्री.... ।।

ओऽऽऽ पंचदेव दरबार है प्यारोऽऽऽ,
सब जग से सुन्दर और न्यारो।। जय श्री....।।

ओऽऽऽ भक्त शिरोमणि, का वहाँ पहराऽऽऽ,
राज न समझा कोई ये गहरा।। जय श्री....।।

ओऽऽऽ जय जय जय श्री देवकीनन्दन ऽऽऽ,
चरणों में हम करते वन्दन।। जय श्री.... ।।

ओऽऽऽ जो भी मन से ध्यान धरे है ऽऽऽ,
पल में संकट दूर करे है।। जय श्री.... ।।

ओऽऽऽ 'कुमार' भी निशिदिन ध्यान लगाये ऽऽऽ,
देव ना तुम जैसा कोई पाये।। जय श्री.... ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सौ बार जनम लेंगे ...)

**गंगाराम तुम्हारे हम, जोगी बन जायेंगे,
जोगी बन घर-घर में, तेरी अलख जगायेंगे ।।टेर।।**

तेरी निश्छल भगती की, हम महिमा गायेंगे,
तेरी अजर अमर ज्योति, घर-घर पहुंचायेंगे,
तेरे नाम की महिमा को, सबको समझायेंगे।।1।।

मेरे बाबा गंगाराम हमें अपना बना लेना,
सीने से लगा लेना, चरणों में जगह देना,
तू हाथ उठा अपना, हम शीश नवायेंगे।।2।।

तेरा पंचदेव दरबार, भगतों की चाहत है,
मिलता है न्याय वहाँ, ना कोई अदालत है,
तेरे दर पर जाकर हम, फरियाद सुनायेंगे।।3।।

कुछ पल का उजाला है, फिर रात अन्धेरी है,
बाबा से प्रीत लगा, क्यूं करता देरी है,
किस्मत का भरोसा क्या, हम चलते जायेंगे ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - उड़े जब-जब जुल्फें तेरी ...)

**ओ सब झूमो, नाचो, गावो,
कि बाबा गंगाराम आये हैं, कीर्त्तन में ।।टेर।।**

ओऽऽऽ हैं ये विष्णु अवतारी - 2,
कि गरूड़ सवार आये हैं, कीर्त्तन में ।।1।।

ओऽऽऽ बाबा में सारे तीरथ - 2,
कि आज चारों धाम आये हैं, कीर्त्तन में ।।2।।

ओऽऽऽ संग लक्ष्मी दुर्गा हनुमत - 2,
कि शिव सपरिवार आये हैं, कीर्त्तन में ।।3।।

ओऽऽऽ है भक्त शिरोमणि संग में - 2,
कि देने आशीर्वाद आये हैं, कीर्त्तन में ।।4।।

ओऽऽऽ गुणगान समिति गाये - 2,
कि भजनों का हार लाये हैं, कीर्त्तन में।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरी प्यारी बहनियाँ ...)

**सब खुशियाँ मनावो, नगर को सजावो,
गंगारामजी की निकली सवारी,
कैसी झांकी सजी है ये प्यारी ।।टेर।।**

आज गंगारामजी को फूलों से सजावो,
मोतियों की लड़ियों को रथ पे लगावो,
घोड़ों के माथे किलंगी लगावो,
और नाचो दे दे तारी... ।।1।।

रणतभवन से पधारे है विनायक,
आये हैं कैलाश से भोले वरदायक,
पर्वतों से शेरांवाली, सागर से लक्ष्मी,
और हनुमत जती बलकारी... ।।2।।

शोभा निराली 'प्रेम' वरणी न जाये,
देवों ने नभ से फूल बरसाये,
धरती भी नाचे आज अम्बर भी गाये,
और देखे है दुनिया सारी... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धमाल ...)

माथो टेक ले बाबा कै दर पै खुल जासी तकदीर,
बाबा गंगाराम बदल दे हाथां की लकीर।
माथो टेक ले...।।

बड़ो दयालू बाबो म्हारो, सब देवां सै न्यारो रे,
लाम्बा हाथ बढाकर मेटै, निज भगतां की पीड़।।
माथो...।।1।।

पंचदेव दरबार म बाबो, न्याय तराजू तोले रे,
कदे ना कदे तो सुणसी तेरी, मतना खोवै धीर।।
माथो...।।2।।

यो विष्णु अवतारी बाबो, प्रेम भाव सै रीझै रे,
मन मन्दिर म आज बसाले, बाबा की तस्वीर।।
माथो...।।3।।

भटक-भटक कर जीवन खोयो, इब क्यूं देर लगावे रे,
बाबा कै भजनां म जाकर 'प्रेम' मिलाले सीर।।
माथो...।।4।।

बाबा गंगाराम के जैसा, कहीं न देखा दानी।
जिनके आशीर्वाद से तर गये, जगमें लाखों प्राणी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - श्याम तेरी वंशी पुकारे राधा नाम ...)

भक्तों के दिल में बसा है तेरा नाम,
बाबा गंगाराम, जय हो बाबा गंगाराम ।।टेर।।

कलयुग में तूने क्या खेल रचाया,
भक्तों के खातिर तू धरती पे आया,
पार करे, भव से जो रटे सुबह-शाम,
बाबा गंगाराम... ।।1।।

बाबा तेरा मन्दिर है जग में निराला,
दुखियों के जीवन में करता उजाला,
भक्तों का, तीरथ बना है तेरा धाम,
बाबा गंगाराम...।।2।।

जिनको मिला है तुम्हारा सहारा,
समझो मिला उसको भव का किनारा,
सुख मिले, सारे दुखों का क्या काम,
बाबा गंगाराम...।।3।।

जीवन हमारा तुम्हारे ही अर्पण,
कब दोगे आकर के भक्तों को दर्शन,
करता है 'राजू' भी लाखों प्रणाम,
बाबा गंगाराम...।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - प्यासे पंछी नील गगन में/ऐसी मस्ती कहां मिलेगी ...)

गंगा जैसे पावन है ये राम के जैसे प्यारे,
गंगाराम हमारे, बाबा गंगाराम हमारे ।।टेर।।

गंगा की पावन धारा से कटते पाप हैं सारे,
राम की कृपा हो जाये तो भव से पार उतारे,
डर मत प्यारे नैया को तेरी ले जाएंगे किनारे,
गंगाराम हमारे।।1।।

देवों के मण्डल में बैठे, देवों के मन भाए,
झुंझनूं में आ धाम बनाया, पंचदेव कहलाए,
विष्णु के अवतारी बाबा, भक्तों के बीच पधारे,
गंगाराम हमारे।।2।।

बाबा गंगाराम नाम देता है शक्ति निराली,
श्री देवकीनन्दन ने भक्ति की शक्ति दिखला डाली,
'मारवाल - सोनी' जैसों को पल में आन उबारे,
गंगाराम हमारे।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - जहाँ डाल-डाल पे ...)

ये है पंचदेव दरबार, यहाँ है पांचों देव निराले,
श्रद्धा से शीश झुकाले-2 ।।टेर।।

हैं माता लक्ष्मी धन की देवी, बाँट रही भंडारे,
है कमलासन पर बैठी मैया, करती वारे न्यारे-2
किस्मत से मिलता है दर ऐसा, हाजरी आज लगा ले ।।1।।

है शिवशंकर भोला भंडारी, संग परिवार यहाँ पे,
गंगा की पावन धार निकलती, गंगेश्वर की जटा से-2
झरने बहते हैं गंगा के, अमृत में आज नहा ले।।2।।

देखो बलशाली पवनपुत्र, हनुमान भी यहाँ विराजे,
शक्ति और बल के वरदानी, काँधे पे गदा है साजे-2
ये राम भक्त बजरंगी तो, माँ अंजनी के हैं लाले ।।3।।

फिर अष्टभुजा है शेर सवारी, जिनकी छवि निराली,
दुष्टों का मर्दन करने को, माँ बन जाती महाकाली-2
आ चरणों में वंदन कर ले, तू अपने भाग्य जगा ले ।।4।।

है पंचों के सरपंच यहाँ, जो गंगाराम कहाये,
ये दया प्रेम की मूरत है, सब भक्तों के मन भाए-2
'संजीव' शरण जा बाबा के, और आशीर्वाद पा ले।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ज्योत से ज्योत जगाते चलो ...)

बाबा को अपना बना लीजिए, भावों से इनको रिझा लीजिए।
बाबा बिना भी है क्या जिंदगी, बात ये दिल में बसा लीजिए।।

गंगाराम नाम है तीरथ, ज्यूं गंगा की धारा,
राम नाम से मिलती मुक्ति, कहता है जग सारा,
हृदय में इनको बसा लीजिए... ।।1।।

भक्तशिरोमणि ने जब ध्याया, नंगे पांवों आया,
सपने में आदेश दिया और पावन धाम बनाया,
श्रद्धा से सिर को झुका लीजिए... ।।2।।

पंचदेव की पुण्य धरा पर, भक्ति रंग दिखलाई,
त्याग तेज से जिसकी माटी, पावन रज कहलाई,
माथे से रज को लगा लीजिए...।।3।।

प्रीत करो तो ऐसी करना, बाबा दौड़े आयें,
'प्रेम' भाव की डोर में बंधकर, अपने गले लगायें,
बाबा से रिश्ता बना लीजिए... ।।4।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ये बन्धन तो प्यार का बन्धन है ...)

सपने को सफल बनाया, सुन्दर मंदिर बनवाया,
भक्ति में शक्ति इतनी, सारे जग को बतलाया,
ऐसे तोऽऽऽ देवकीनन्दन हैं, चरणों मेंऽऽऽ वन्दन है ।टेर।।

बाबा गंगाराम के, हरदम संग विराजे,
शिव शंकर के शीश पर, जैसे गंगा साजे,
भगतों के कष्ट मिटाए, सत्पथ की राह दिखाए।
ऐसे तो....

भगती की शक्ति की, माया अजब रचाई,
गायत्री देवी ने जब, प्रभु से अरज लगाई,
एक चमत्कार दिखलाया, था चिता से हाथ उठाया।
ऐसे तो....

मंदिर के प्रांगण में, अद्भुत बनी समाधि,
जिसकी रज भगतों की, काटे सारी व्याधि,
ये भक्तराज कहलाए, भक्ति का दीप जलाए।
ऐसे तो....

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ढोला-ढोल मंजीरा ...)

बाबा चमत्कार दिखलायाजी,
देवकीनन्दन की भक्ति को मान बढ़ायाजी ।टेर।।

जलती चिता से हाथ दाहिनो, झट से बाहर आयो,
भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन, सै परचो दिलवायो,
सबनै आशीर्वाद दिलायाजी, देवकीनन्दन की...।।1।।

भक्तशिरोमणि की सूरत में, ईक बदलाव थो आयो,
मुखड़ो बणग्यो बालरूप को, सबनै घणो सुहायो,
कैसो अद्भुत रूप दिखायोजी, देवकीनन्दन की...।।2।।

गंगा जैसी जल की धारा, शीश से बहणै लागी,
'रवि' कहवै की देख के परचा, सबकी भावना जागी,
सगला जय-जयकार लगायाजी, देवकीनन्दन की...।।3।।

तुम कलियुग के हनुमत हो, हे भक्त देवकीनन्दन।
हम भक्त सभी मिलकर के, करते तेरा अभिनन्दन।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - कुण सुणैगो ...)

देवकीनन्दन सोच रहे हैं, माया के बन्धन तोड़ रहे हैं। टेर।।

धर्म की राहें, मुझको पुकारे,
विधाता की लेखनी मुझको निहारे,
देवी गायत्री से बोल रहे हैं।
देवकीनन्दन ... ।।1।।

बाबा की प्रेरणा से वैराग्य जागा,
धन यश वैभव सारा ही त्यागा,
हाथों में तुलसीदल ले छोड़ रहे हैं।
देवकीनन्दन... ।।2।।

बाबा के चरणों में बीतेगा जीवन,
तन मन कर देंगे सेवा में अर्पण,
'रवि' कहे रस जीवन में घोल रहे हैं।
देवकीनन्दन...।।3।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, परमभक्त कहलाये।
बाबा गंगाराम प्रभु की, अमरध्वजा फहराये।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तेरो मन्दिर छोटो पड़ग्यो रे ...)

सारै जग मं नाम कमायो थे मंदरियो बणवाकै,
भक्त शिरोमणि थे कहलाया सुपणो सफल बणाकै।

सच्ची भगती कर कलियुग का हनूमान कहलाया,
त्याग तपस्या कर बाबा नै घर-घर में पुजवाया,
म्हानै बाबा सै मिलवाया थे, मंदरियो बणवाकै...।।1।।

देवकीनन्दन थारो वन्दन करै है दुनिया सारी,
थारी जैसी भक्ति दीज्यो या ही अरज हमारी
भगती को दीप जलाया थे, मंदरियो बणवाकै... ।।2।।

थारी भक्ति को गर म्हानै एक अंश मिल जावै,
'श्याम' कहवै म्हां जैसा पापी वैतरणी तर जावै,
म्हानै चमत्कार दिखलाया जी, मंदरियो बणवाकै... ।।3।।

हे देवकीनन्दन तुमने, भक्ति का दिया प्रमाण।
इतिहास लिखा है तुमने, तेरा अमर हुआ बलिदान।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - मोहे आई न जग से लाज... घुंघरू टूट गए)

जब उठा चिता से हाथ, मिला दुनिया को आशीर्वाद,
तुम्हारा क्या कहना... 2 ।टेर।।

सारे जहाँ ने ये देखा नजारा,
माथे से निकली थी गंगा की धारा,
थम गए धरती आकाश, मिला दुनिया को आशीर्वाद,
तुम्हारा क्या कहना...2 ।।1।।

छोड़ दिया तूने सुख जीवन का,
मान रखा पर अपने वचन का,
बड़ा भारी किया रे त्याग, मिला दुनिया को आशीर्वाद,
तुम्हारा क्या कहना...2 ।।2।।

त्याग और ममता की मूरत है न्यारी,
गायत्री देवी है संगनी तुम्हारी,
'सोनू' सदा निभाया साथ, मिला दुनिया को आशीर्वाद,
तुम्हारा क्या कहना...2 ।।3।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ये बन्धन तो प्यार का ...)

हनुमत को राम से लागी, मीरा को श्याम से लागी,
ऐसी ही लगन देवकी को, श्री गंगाराम से लागी,
भक्तों काऽऽऽ नाता भगवन से, दिल का जोऽऽऽ धड़कन से।

हनुमत चीर के सीना, सियाराम का दरश कराए,
जलती हुई चिता से, देवकी हाथ उठाए,
भक्ति का बल दिखलाया, दुनिया को ये समझाया,
सच्चे भक्तों के सिर पे, रहती भगवान की छाया।।
भक्तों का...

श्याम दिवानी मीरा ने, भेष धरा जोगन का,
देवकीनन्दन ने भी त्यागा, सुख अपने जीवन का,
करते थे देवकीनन्दन, श्री गंगाराम का वन्दन,
कर डाला अपना जीवन, चरणों में इनके अर्पण।।
भक्तों का...

त्याग, तपस्या करके, भक्ति का वर पाया,
दु:ख झेले कितने पर, अपना वचन निभाया,
भक्ति में सब कुछ खो के, जीते हैं दिवाने जैसे,
जो भक्त हो 'सोनू' ऐसे भगवान मिले ना कैसे।।
भक्तों का...

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तुम्हीं मेरे मंदिर...)

बाबा गंगाराम कैसे, वचन मैं निभाऊं,
मंदिर तेरा मैं, कैसे बनाऊँ ।।टेर।।

दीनों का नाथ है तू तुझे क्या बताऊँ,
घट-घट की जानें है तू क्या मैं समझाऊँ,
मैं हूँ अकेला कैसे हाथ बढाऊँ। मंदिर तेरा मैं... ।।1।।

दुनिया ये सारी मुझको देती है ताना,
पागल मुझे कहता है सारा जमाना,
पथ में है कांटे कैसे, फूल मैं खिलाऊँ। मंदिर तेरा मैं... ।।2।।

बात ये मेरी बाबा कौन सुनेगा,
तेज तुम्हारा बोलो कौन सहेगा,
कोई ना माने मेरी किसे मैं बताऊँ। मंदिर तेरा मैं... ।।3।।

आकर के बोले बाबा मेरी है ये माया,
हाथ बढाओ तुमको मिले सब रचाया,
सुनो देवकी तेरा साथ मैं निभाऊँ। मंदिर तेरा मैं... ।।4।।

देवकीनन्दन बोले मुख नहीं मोड़ूं,
तज दूंगा धन वैभव पर चरण नहीं छोड़ूं,
प्राण भले ही जाये, वचन मैं निभाऊँ। मंदिर तेरा मैं... ।।5।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - कसमें वादे ...)

आशीर्वाद दिया भक्तों को चिता से हाथ उठाया है,
भक्तशिरोमणि ने भक्ति का चमत्कार दिखलाया है।

माथे से जलधार बही, और बालापन का रूप लिया,
शीतलता दर्शायी और सुख शांति का वरदान दिया,
त्याग, तपस्या सत्य का संगम, भक्तों को आज दिखाया है।।1।।

देख के इस अद्भुत माया को चक्र समय का थम सा गया,
थम गई जैसे सारी सृष्टि दिनकर का रथ रूक सा गया,
मुक्ति पथ के इस राही ने भक्ति का मार्ग बताया है।।2।।

अमर हुए हैं देवकीनन्दन, भक्त के संग भगवान मिले,
कैसी साधना कैसी अराधना इनको गंगाराम मिले,
'संजय-नवीन' कहे घर-घर में भक्ति का दीप जलाया है।।3।।

तुम कलयुग के हनुमत हो, हे भक्त देवकीनन्दन।
हम भक्त सभी मिलकर के, करते तेरा अभिनन्दन।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - श्री वृन्दावन धाम अपार...)

जय हो पंचदेव दरबार, जय हो भक्त देवकीनन्दन ।।टेर।।

तुम पंचदेव के प्यारे, गंगाराम की आंख के तारे,
तेरा सारा जग परिवार, जय हो भक्त देवकीनन्दन।।1।।

सपने को सफल बनाया, प्यारा मंदिर बनवाया,
फैला जग में तेज अपार, जय हो भक्त देवकीनन्दन।।2।।

जब प्राणहीन हुई काया, तब चिता से हाथ उठाया,
होती सत् की जय-जयकार, जय हो भक्त देवकीनन्दन।।3।।

जो तेरी शरण में आते, वो तेरा आशीष पाते,
होता पल भर में उद्धार, जय हो भक्त देवकीनन्दन।।4।।

तुम रहे सदा ही त्यागी, जग त्याग के बने 'बैरागी'
तेरे गुण गाये संसार, जय हो भक्त देवकीनन्दन।।5।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - क्या मिलिए ऐसे लोगों से ...)

माँ गायत्री को भक्ति का पर्चा इसने दिखाया है।
जलती चिता से हाथ उठाकर चमत्कार दिखलाया है।।

भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन से अरदास लगाई है,
ऐसा कुछ करके दिखलाओ, तुमको मेरी दुहाई है,
नश्वर तन को त्याग के इसने, बालरूप दिखलाया है।
जलती चिता... ।।1।।

रो-रो करके जब भगतों ने इनकी चिता सजाई है,
शिव शंकर के जैसे इसने, सर से गंगा बहाई है,
झुंझनूं की पावन धरती को तीरथ धाम बनाया है।
जलती चिता... ।।2।।

जाते-जाते सब भक्तों को आशीर्वाद दिया इसने,
गंगाराम की भगति का सच्चा प्रमाण दिया इसने,
आशीर्वाद दिवस तबसे भगतों ने 'श्याम' मनाया है।
जलती चिता... ।।3।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - मेहंदी रची थारै हाथां मं...)

तप और त्याग की मूरत है, सौम्य सलोनी सूरत है।
है देवकीनन्दन की परछांई, गायत्री माँ ।।टेर।।

पंचदेव मंदिर में बाबा गंगाराम विराज रहे,
उनके श्री चरणों में प्यारे भक्त शिरोमणि साज रहे,
भक्ति का वरदान मिला, सेवा को सम्मान मिला,
इनका हरपल ही साथ निभाई, गायत्री माँ।।

जैसे अग्नि में तपकर ही सोना कुन्दन बन जाता,
वैसे ही तप त्याग के बल पर तेज अनोखा है छाता,
मुखड़ा दम-दम दमक रहा, सत् के तेज से चमक रहा,
श्री गंगाराम की कृपा है पाई, गायत्री माँ।।

ऐसी भक्ति ऐसी शक्ति नहीं मिलेगी और कहीं,
चाहे सारे जग में ढूंढे कहते हैं हम बात सही,
भक्ति की ये सागर है, भरती सबकी गागर है,
ममता की देवी है कहलाई, गायत्री माँ।।

नारी ही तो जग जननी है, नारी अन्नपूर्णा माता,
नारी ही दुर्गा, लक्ष्मी है, नारी ही विद्या दाता,
नारी धर्म की महिमा है, ये ही पुण्य की गरिमा है,
'रवि' कहता सत् सकलाई पाई, गायत्री माँ।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - देना हो तो दीजिए ...)

माता गायत्री देख कर तेरा भारी त्याग।
सीता और अनुसूईया की, आती है हमको याद।टेर।।

कैसे तेरे बिना देवकी, अपना वचन निभा पाते,
तूफानों में अपनी नईया, कैसे पार लगा पाते,
माँ मंजिल तक पहुंचे वो, पकड़ के तेरा हाथ ।।1।।

सातों वचन की मर्यादा को, तूने खूब निभाया है,
त्याग तपस्या का बल सारी दुनिया को दिखलाया है,
तूने बुला लिया भगवन को, माँ उठा के अपने हाथ।।2।।

तू ने हम पर भी मईया, एहसान किया बड़ा भारी है,
तू ने ही करवाई बाबा, से पहचान हमारी है,
किस्मत जागी पाकर के, बाबा का आशीर्वाद।।3।।

पंचदेव के मंदिर में ही अब तो है संसार तेरा,
बाबा के चरणों में बैठा, पूरा ये परिवार तेरा,
'सोनू' करते वो सेवा, बाबा की दिन और रात।।4।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ढोला-ढोल मजीरा...)

छम-छम भक्त देवकी नाचै-रे नाचै रे,
पंचदेव संग भक्त देवकी प्यारो लागै रे,
प्यारो लागै रे सबस्यूं न्यारो लागै रे ।।टेर।।

भगतां मं हुयो भगत निरालो मन्दिर जद बणवायो,
सही डगर जद चाल्यो देवकी शिरोमणि कहलायो,
धुन श्री गंगाराम री लागी रे - लागी रे,
ध्वजा हाथ ले भक्त शिरोमणि चालै सागै रे,
छम-छम....।।1।।

अजब निराली लीला राची, अचरज मन मै आयो,
पड़ी थी सूनी काया ईणरी, कैया हाथ उठायो,
इंण मं कोई शक्ति लागै रे-लागै रे,
दे आशीष देवकी म्हारी किस्मत जागै रे,
छम-छम....।।2।।

झुंझनूं है श्री धाम निरालो, लागै प्यारो-प्यारो,
जिणरी माटी मै रमग्यो है, भक्त देवकी, प्यारो,
माथै रज रो तिलक लगाजै रे, लगाजै रे,
हाथां री रेखा बदलैगी, सागै-सागै रे,
छम-छम....।।3।।

हनूमान री जैंया देवकी, भक्त हुयो मतवालो,
कलयुग मै लागै सब भगतां रो है यो रखवालो,
पल-पल महिमा 'मुन्ना' गावै र - गावै रे,
सिद्ध करैगा सगला कारज यो ही लागै रे,
छम-छम....।।4।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ओल्यूं ...)

हाथ उठायो जी, चिता सै हाथ उठायो जी,
थारै भगतां री पत राखण यो परचो दिखलायो जी।टेर।।

भक्तां री थे पीड़ पिछाणो, भक्तां रा आधार,
हे करूणा रा सागर म्हानै, थारो ही आधार,
थारो भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, नाम कुहायो जी।।1।।

गायत्री अरदास करी जद, गूंजा मन्त्रोच्चार,
जलती चिता में शीश सै थारै, निकली जल की धार,
पावन गंगा रो जल मस्तक में, आन समायो जी।।2।।

थारी समाधि जिन धोरां पै, धोरा वह पुनवान,
सहज साधना जगै जठै स्यूं जागै आतम ज्ञान,
रेतीली बालू माटी रो थे, मान बढायो जी।।3।।

अपणै हाथां द्यो आशीशां, क्या न देर लगाओ,
जागो-जागो ज्योतिपुंज थे, परचो नयो दिखाओ,
म्हें तो थारो थानै सौंप दियो थे, लाज बचाओ जी।।4।।

गंगाराम के श्री चरणां मं, जीवन दियो गुजार,
भक्त शिरोमणि ओजू आवो, म्हें भी रह्या पुकार,
'राजेन्द्र' करै अरदास थे म्हानै, मत बिसराज्योजी।।5।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - सारे जग से साँवरे...)

भक्त शिरोमणि भक्तां नै थारी है दरकार,
हाथ दया को सिर पर म्हारै रख दो ना एक बार।

बाबा गंगाराम की भगती मिली थानै,
थारी भक्ति की शक्ति नै सारो जग जाणै,
म्हां पर भी थे बरसा दयो, अपनो थोड़ो प्यार।। हाथ...।।1।।

जलती चिता सै भगतां नै जद आशीर्वाद दियो,
चेहरो हो गयो बालरूप थारी भक्ति को डंको बज्यो,
फिर पल में निकल पड़ी, शीश से गंगा की धार।। हाथ...।।2।।

आशीर्वाद दिवस नै थारो आशीष मिल जावै,
थारै सारै भगतां की सूनी बगिया खिल जावै,
थारी किरपा मांग रह्यो, भक्तां को परिवार।। हाथ... ।।3।।

हे भक्त शिरोमणि तुमने, भक्ति का दिया प्रमाण।
इतिहास रचा है तुमने, तेरा अमर हुआ बलिदान।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - थारै झांझ नगाड़ा बाजै रे ...)

मंदिर प्यारो घणो बणवायो रे,
गंगाराम को वचन देवकी खूब निभायो रे ।।टेर।।

शिव परिवार के संग में लक्ष्मी, दुर्गा, हनुमत साज्या,
विष्णु का अवतारी गंगा राम बीच मं विराज्या,
देवकी चरणां मं ध्यान लगायो रे, गंगाराम को... ।।1।।

सत् के पथ पर चाल देवकी, जग मं नाम कमायो,
बाबा गंगाराम नै अपनै, हृदय मांहि बसायो,
देवकी शिरोमणि कहलायो रे, गंगाराम को... ।।2।।

बाबा गंगाराम नाम को, डंको जग में बजायो,
धर्म ध्वजा हाथां में लेकर, कलियुग मं लहरायो,
गंगाराम की किरपा पायो रे, गंगाराम को... ।।3।।

पंचदेव दरबार की महिमा, सारो ही जग गावे,
सूरज की पहली किरणां भी, आकै शीश नवावे,
'संजय-नवीन' भी वारी जावे रे, गंगाराम को... ।।4।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - म्हारी रे मंगेतर ...)

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, चरणां में थारै करां म्हें वन्दन,
थां बिन अधूरो दरबार, थे उत्सव में पधारोगा ।।टेर।।

आज गंगारामजी को उत्सव आयो,
मनड़ो म्हारो है हर्षायो,
थारै सै करां हां पुकार ।।1।।

श्री गंगाराम का थे ही हनुमान हो,
भक्तां रै भक्त की थे ठाडी एक आन हो,
भक्तां नै थारी दरकार।।2।।

थारै आणै सै म्हारो काम पट जावैगो,
थारै होतां दर्शन खातिर कुण नट जावैगो,
थारै 'कुमार' की पुकार ।।3।।

बाबा गंगाराम जगत में, पंचदेव कहलाये।
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, उनके भक्त कहाये।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - स्वर्ग से सुन्दर ...)

देवकीनन्दन ने जीवन में, अद्भुत त्याग किया,
सभी ये जानते हैं, सभी ये मानते हैं ।।टेर।।

बाबा की सेवा का ही, प्रण ले लिया था,
घर-बार धन और दौलत, छोड़ दिया था,
हाथ में तुलसी दल लेकर के, सब कुछ त्याग दिया,
सभी ये जानते हैं... ।।1।।

प्रण को निभाने ये तो, झुंझनूं में आये,
मन्दिर में रहके ही, वो सुख पाये,
बाबाजी के, चरणों मे ही, जीवन बिता दिया,
सभी ये जानते हैं... ।।2।।

कहता 'रवि' अंतिम, वक्त जो आया,
जलती चिता से अपना सत् था दिखाया,
बाबा के थे, सच्चे सेवक, सबको दिखा दिया,
सभी ये जानते हैं...।।3।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - देना हो तो दीजिए...)

भाव भक्ति के आंसू मेरे, करते हैं फरियाद।
देवकीनन्दन दीजिए, हमको आशीर्वाद ।।टेर।।

भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन देव बड़े दातारी हो।
गंगाराम चरण में अर्पित पंचदेव के पुजारी हो।
भाव भक्ति मय जीवन की तुम हो मेरी बुनियाद।।1।।

प्राणहीन काया ने शक्ति, का अद्भुत प्रमाण दिया।
बालरूप दर्शन देकर भक्ति का सुन्दर ज्ञान दिया।
जलती चिता से हाथ उठाकर दिया था आशीर्वाद ।।2।।

आशीर्वाद दिवस का उत्सव मिलकर सभी मनाते हैं।
बाबा के संग भक्त शिरोमणि तुमको यहाँ बुलाते हैं।
'भक्त कुमार' के साथ सभी हम करते हैं अरदास ।।3।।

आशीर्वाद दिवस की बेला, भक्त शिरोमणि बांटे प्यार
आशीषों से झोली भर लो, जोड़ो मन से मन के तार।।